NEXT IAS

कला एवं संस्कृति

सिविल सेवा परीक्षा 2027

MADE EASY PUBLICATIONS
द्वारा प्रकाशित

MADE EASY Publications Pvt. Ltd.
कॉर्पोरेट कार्यालय: 44-A/4, कालू सराय
(हौज़ ख़ास मेट्रो स्टेशन के निकट), नई दिल्ली-110016
संपर्क सूत्र: 011-45124660, 8860378007
ई-मेल करें: infomep@madeeasy.in
विजिट करें: www.madeeasypublications.org

कला एवं संस्कृति

© कॉपीराइट: Made Easy Publications Pvt. Ltd.

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, पुनर्मुद्रण, प्रस्तुतीकरण और किसी ऐसे यंत्र में संग्रहण नहीं किया जा सकता, जिससे इसकी पुनर्प्राप्ति की जा सकती हो अथवा इसका स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार) से उपर्युक्त उल्लिखित प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण: 2024
द्वितीय संस्करण: 2025
तृतीय संस्करण: 2026

विषयसूची

कला एवं संस्कृति

खंड- A : दृश्य कला

अध्याय 1

भारतीय वास्तुकला (Indian Architecture)............................2

1.1 प्राचीन भारत में वास्तुकला (Architecture in Ancient India)............................2

सिंधु घाटी सभ्यताकालीन वास्तुकला (Architecture during Indus Valley Civilization)......2

1.2 मौर्यकालीन वास्तुकला (Mauryan Architecture)...........5

स्तंभ (Pillars)..5

स्तूप (Stupas)..6

गुफ़ाएँ (Caves)..7

महल और आवासीय भवन (Palaces and Residential Buildings)....................7

1.3 मौर्योत्तरकालीन वास्तुकला (Post-Mauryan Architecture)...............................7

1.4 संगम वास्तुकला (Sangam Architecture)..................8

1.5 गुप्तकालीन वास्तुकला (Architecture of Gupta Age)................................8

1.6 गुप्तकालीन गुहा वास्तुकला (Cave Architecture of Gupta Age).......................9

अजंता गुफ़ाएँ (Ajanta Caves).................................9

एलोरा गुफ़ाएँ (Ellora Caves)................................10

बाघ गुफ़ाएँ (Bagh Caves)...................................10

जूनागढ़ गुफ़ाएँ (Junagarh Caves)..........................10

नासिक गुफ़ाएँ (Nashik Caves)..............................10

मोंटपेरिर/मंडपेश्वर गुफ़ाएँ (Montperir/Mandapeshwar Caves)....................11

कार्ले गुफ़ाएँ (Karle Caves)..................................11

कन्हेरी गुफ़ाएँ (Kanheri Caves)..............................11

गुंटापल्ले गुफ़ाएँ (Guntapalle Caves)......................11

1.7 गुप्तकालीन मंदिर वास्तुकला (Temple Architecture of Gupta Period).............11

गुप्तकालीन मंदिर वास्तुकला की विशेषताएँ (Features of Temple Architecture of Gupta Period)...12

देवगढ़ का दशावतार मंदिर (Dashavatara Temple at Deogarh)....................12

भीतरगाँव मंदिर (Bhitargaon Temple).....................12

1.8 गुप्तकाल में मंदिर वास्तुकला का उद्-विकास (Evolution of Temple Architecture in Gupta Period)..13

प्रथम चरण (Stage - 1)..13

द्वितीय चरण (Stage - 2)..13

तृतीय चरण (Stage - 3)..13

चतुर्थ चरण (Stage - 4)..14

पंचम चरण (Stage - 5)..14

1.9 मंदिर स्थापत्य की विभिन्न शैलियाँ (Different Styles of Temple Architecture)...........14

नागर शैली (Nagara Style)...................................14

खजुराहो शैली (Khajuraho Style)...........................14

शिखर की आकृति के आधार पर नागर शैली के मंदिरों के तीन उप-प्रकार (Three Subtypes of Nagara Temple Depending upon the Shape of Shikhara)..15

दक्षिण भारत में मंदिर स्थापत्य (Temple Architecture in South India).................16

द्रविड़ शैली (Dravidian Style)................................17

वेसर शैली (Vesara Style)....................................18

वास्तुकला की विजयनगर शैली (Vijayanagara Style of Architecture)..................19

होयसल शैली (Hoysala Style)...............................21

नायक शैली (Nayaka Style).................................21

1.10 मध्यकालीन भारत में वास्तुकला (Architecture in Medieval India).........................22

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला (Indo-Islamic Architecture)................................22

मकबरा वास्तुकला (Tomb Architecture)...................22

अरबेस्क शैली (Arabesque Style)..........................23

1.11 प्रमुख इंडो-इस्लामिक वास्तुकलात्मक शैलियाँ (Prominent Indo-Islamic Architectural Styles).....23

साम्राज्यिक शैली – दिल्ली सल्तनत (Imperial Style – Delhi Sultanate).......................23

ग़ुलाम वंश (Slave Dynasty)....23
कुतुबुद्दीन ऐबक (Qutubuddin Aibak)....23

1.12 वास्तुकला की प्रांतीय शैली (Provincial School of Architecture)....25
वास्तुकला की बंगाल शैली (Bengal School of Architecture)....25
वास्तुकला की मालवा शैली - मध्य प्रदेश एवं राजस्थान (Malwa School of Architecture – Madhyapradesh and Rajasthan)....25
वास्तुकला की जौनपुर शैली - उत्तर प्रदेश (Jaunpur School of Architecture – Uttarpradesh)....25

1.13 मुग़ल वास्तुकला (Mughal Architecture)....26
शेरशाह सूरी (Shershah Suri)....26
हुमायूँ (Humayun)....26
अकबर (Akbar)....27
जहाँगीर (Jahangir)....29
शाहजहाँ (Shahjahan)....29
औरंगजेब (Aurangzeb)....31

1.14 दक्कन शैली (Deccani Style)....31
बीजापुर शैली (Bijapur Style)....31

1.15 आधुनिक भारत में वास्तुकला (Architecture in Modern India)....31
सिक्ख वास्तुकला (Sikh Architecture)....31

1.16 औपनिवेशिक वास्तुकला (Colonial Architecture)....32
ब्रिटिश (British)....32
इंडो-गोथिक शैली (Indo-Gothic Style)....32
नव-रोमन शैली (Neo-Roman Style)....32
फ्रांसीसी (French)....33
पुर्तगाली (Portuguese)....33

अध्याय 2

भारतीय मूर्तिकला (Indian Sculpture)....37

2.1 भारतीय मूर्तिकला की विशेषताएँ (Features of Indian Sculpture)....37

2.2 प्राचीन भारत में मूर्तिकला (Sculptures in Ancient India)....38
सिंधु सभ्यताकालीन मूर्तिकला (Sculptures during Indus Civilization)....38
सिंधु घाटी सभ्यता की धातु मूर्तिकला (Metal Sculptures of Indus Valley Civilization)....38
सिंधु घाटी सभ्यताकालीन पाषाण मूर्तियाँ (Stone Sculptures of Indus Valley Civilization)....38
सिंधु घाटी सभ्यता की टेराकोटा मूर्तिकला (Terracotta Sculptures of Indus Valley Civilization)....38

2.3 मौर्यकालीन मूर्तिकला (Mauryan Sculpture)....39
मौर्यकालीन मूर्तिकला पर विदेशी प्रभाव (Foreign Influence on Mauryan Sculpture)....39
मौर्यकालीन स्तूप मूर्तिकला (Stupa Sculpture during Mauryan Period)....39
मौर्यकालीन स्तंभ मूर्तिकला (Pillar Sculptures of Mauryan Period)....40
मौर्यकालीन लघु मूर्तिकला (Figurine Sculptures of Mauryan Period)....40
मौर्योत्तरकालीन मूर्तिकला (Post-Mauryan Sculpture)....41
कुषाणकालीन मूर्तिकला (Sculptures of Kushana Period)....41
गांधार शैली की मूर्तिकला (Sculptures of Gandhara School)....41
मथुरा शैली की मूर्तिकला (Sculptures of Mathura School)....41
अमरावती शैली की मूर्तिकला (Sculptures of Amaravati School)....42
गुप्तकालीन मूर्तिकला (Sculptures during Gupta Period)....43
पाल शैली की मूर्तिकला (Sculptures of Pala School)....44
दक्षिण भारत में मूर्तिकला (Sculptures in South India)....44
राष्ट्रकूट मूर्तिकला (Rashtrakutas Sculptures)....45
होयसल मूर्तिकला (Hoysalas Sculptures)....46
विजयनगर मूर्तिकला (Vijaynagara Sculptures)....46
चोल मूर्तिकला (Cholas Sculpture)....46
पल्लवों की मूर्तिकला (Sculptures of Pallavas)....47

2.4 मध्यकालीन भारत में मूर्तिकला (Sculptures in Medieval India)....48
दिल्ली सल्तनत की मूर्तिकला (Sculptures of Delhi Sultanate)....48
मुग़लों की मूर्तिकला (Mughals Sculptures)....48
आधुनिक भारत में मूर्तिकला (Sculptures in Modern India)....48

अध्याय 3

भारतीय चित्रकला (Indian Paintings)....50

3.1 चित्रकला के सिद्धांत (Principles of Painting)....50

3.2 प्राचीन भारत में चित्रकला (Paintings in Ancient India)....50
प्रागैतिहासिक चित्रकला (Pre-Historic Paintings)....50
उच्च पुरापाषाणकालीन चित्रकला (Paintings of Upper Paleolithic Period)....50

मध्यपाषाणकालीन चित्रकला (Paintings of Upper Mesolithic period)...............50

ताम्रपाषाणकालीन चित्रकला (Paintings of Chalcolithic Period).......................51

3.3 भारतीय चित्रकला का वर्गीकरण (Classification of Indian Paintings)....................51

भित्ति-चित्रकला (Mural Paintings)...........................51

लघु चित्रकला (Miniature Paintings).......................54

राजपूत चित्रकला (Rajput Paintings)........................57

3.4 पहाड़ी चित्रकला शैली (Pahari School of Painting).................................58

3.5 दक्षिण भारत में लघु चित्रकला (Miniatures in South India).................................59

तंजौर चित्रकला (Tanjore Paintings)........................59

मैसूर चित्रकला (Mysore Paintings).........................60

3.6 आधुनिक चित्रकला (Modern Paintings)..................60

कंपनी चित्रकला (Company Paintings)...................60

बाज़ार चित्रकला (Bazaar Paintings).......................61

3.7 घनवादी चित्रकला शैली (Cubist Painting Style)........61

3.8 प्रसिद्ध भारतीय चित्रकार (Famous Indian Painters)...61

अमृता शेरगिल (Amrita Shergill) 62

एम.एफ. हुसैन (M. F. Hussain)..............................62

अबनींद्रनाथ टैगोर: 1871-1951 (Abanindranath Tagore: 1871-1951).................62

तैयब मेहता: 1925-2009 (Tyeb Mehta: 1925-2009)..................................62

सतीश गुजराल (Satish Gujral)................................62

3.9 भारत में लोक चित्रकला (Folk Paintings in India).....63

मधुबनी चित्रकला (Madhubani Paintings) 63

पट्टचित्र चित्रकला (Pattachitra Paintings)................63

कालीघाट चित्रकला (Kalighat Paintings).................64

वर्ली चित्रकला (Warli Paintings)............................64

पैतकर चित्रकला (Paitkar Paintings)........................64

कोहवर और सोहराई चित्रकला (Kohvar and Sohrai Paintings)...........................64

कलमकारी चित्रकला (Kalamkari Painting) 65

फड़ चित्रकला (Phad Paintings) 65

मंजूषा चित्रकला (Manjusha Painting).....................66

थांगका चित्रकला (Thangka Painting).....................66

पटुआ चित्रकला (Patua Painting)...........................66

पिथोरो चित्रकला (Pithoro Painting).........................66

पिछवाई/नाथद्वारा चित्रकला (Pichhwai/Nathdwara Painting) 67

चेरियल स्क्रॉल चित्रकला (Cheriyal Scroll Painting)...................................67

कालमेझुथु चित्रकला (Kalamezhuthu Painting).........67

भौगोलिक संकेत (जीआई) संरक्षित भारत की चित्रकला (Geographical Indication Protected Paintings of India)..............................68

अध्याय 4

भारतीय हस्तशिल्प (Indian Handicraft).............................69

4.1 वस्त्र (Textiles) 69

जामदानी (Jamdani)...69

इकत/इक्कत (Ikat/Ikkat)...69

4.2 वस्त्रों की सतह की सजावट (Surface Decoration of Textiles).........................70

वस्त्र छपाई (Textile Printing).................................70

कलमकारी (Kalamkari) 70

बाँधना और रंगना (Tie and Dye)..............................70

बाटिक (Batik)..71

जड़ाउ वर्क (Applique Work).................................71

4.3 भारत में कढ़ाई कला (Embroidery Art in India) 71

फुलकारी (Phulkari) 71

जरदोजी (Zardozi) 72

आरी (Aari)..72

बंजारा कढ़ाई (Banjara Embroidery) 72

चिकनकारी कढ़ाई (Chikankari Embroidery) 72

क्रीवेल कढ़ाई (Crewel Embroidery)........................72

गोटे का कार्य (Gota Work)....................................73

कांठा (Kantha) 73

कारचोबी (Karchobi) 73

कशीदाकारी (Kashidakari).....................................73

कसूती (Kasuti) 73

काठी/रैबारी कला (Kathi/Rabari Art) 73

पत्ती का काम (Patti Ka Kaam)..............................73

पिछवाई (Pichhwai) 74

शमिलामी (Shamilami) 74
टोडा कढ़ाई (Toda Embroidery) 74
4.4 हाथी दाँत शिल्पकला (Ivory Crafting) 74
4.5 काष्ठ शिल्प (Wooden Work) 74
काष्ठ नक्काशी (Wood Carving) 74
काष्ठ जड़ाई/मीनाकारी (Wood Inlay/Marquetry) 75
लकड़ी मोड़ना और लाह के बर्तन (Wood Turning and Lacquerware) 75
4.6 मृदा एवं मृदभांड शिल्प (Clay and Pottery Work) 75
4.7 धातु शिल्प (Metal Crafts) 76
4.8 चर्म उत्पाद (Leather Products) 77
4.9 मिट्टी के बर्तनों का विकास (Evolution of Pottery) 77
4.10 नवपाषाण युग (Neolithic Age) 77
विशेषताएँ (Features) 77
4.11 ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic Age) 77
4.12 हड़प्पा सभ्यता (Harappan Civilization) 78
4.13 वैदिक काल: चित्रित धूसर मृद्भांड - पीजीडब्ल्यू (Vedic Era: Painted Grey Ware - PGW) 80
4.14 उत्तर वैदिक काल: उत्तरी काला पॉलिशदार मृद्भांड - एनबीपीडब्ल्यू (Later Vedic Era: Northern Black Polished Ware - NBPW) 80
4.15 उत्तर वैदिक काल का अंत: उत्तरी काले पॉलिशदार मृद्भांड - एनबीपीडब्ल्यू (End of Later Vedic Era: Northern Black Polished Ware - NBPW) 80
4.16 महापाषाण काल (Megalithic Era) 80

अध्याय 5

यूनेस्को के मूर्त विश्व धरोहर स्थल (UNESCO's Tangible World Heritage Sites) 83
5.1 चयन के लिए मानदंड (Criteria for Selection) 83
5.2 नामित स्थलों की विधिक स्थिति (Legal Status of Designated Sites) 83
5.3 भारत में यूनेस्को के विश्व विरासत स्थल (UNESCO's World Heritage Sites in India) 84
सांस्कृतिक स्थल - 34 (Cultural Sites – 34) 84

खंड- B: प्रदर्शन कलाएँ

अध्याय 6

भारतीय संगीत (Indian Music) 95
6.1 भारतीय संगीत की उत्पत्ति और इतिहास (Origin and History of Indian Music) 96
6.2 भारतीय संगीत के स्तंभ (Pillars of Indian Music) 96
स्वर (Swaras) 96
राग (Raga) 96
ताल (Tala) 97
6.3 भारतीय संगीत का वर्गीकरण (Classification of Indian Music) 97
शास्त्रीय संगीत (Classical Music) 98
कर्नाटक संगीत (Carnatic Music) 101
6.4 भारतीय लोक संगीत (Indian Folk Music) 102
कुछ प्रसिद्ध लोक संगीत परंपराएँ इस प्रकार हैं: 102
6.5 शास्त्रीय और लोक संगीत का मिश्रण (Fusion of Classical and Folk Music) 105
सुगम संगीत (Sugam Sangeet) 105
रवींद्र संगीत (Rabindra Sangeet) 106
हवेली संगीत (Haveli Sangeet) 106
गण संगीत (Gana Sangeet) 106
6.6 आधुनिक संगीत (Modern Music) 106
रॉक संगीत (Rock Music) 106
जैज़ संगीत (Jazz music) 106
साइकेडेलिक ट्रांस (Psychedelic Trance) 106
पॉप संगीत (Pop Music) 106
6.7 संगीत वाद्ययंत्र (Musical Instruments) 106
तत् वाद्य (Tata Vadya) 106
सुषिर वाद्य (Sushir Vadya) 107
अवनद/अवनद्ध वाद्य (आघात वाद्ययंत्र) [Awanad/Avanaddha Vadya (Percussion Instruments)] 107
घन वाद्य (इडियोफोन) 107

अध्याय 7

भारत के नृत्य (Dances of India) 109
7.1 परिचय (Introduction) 109
7.2 विभिन्न नृत्यों के पहलू और तत्त्व (Aspects & Elements of Various Dances) 109
7.3 भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ (Indian Classical Dance Forms) 110
भरतनाट्यम् (Bharatnatyam) 110
कुचिपुड़ी (Kuchipudi) 112
कत्थकली (Kathakali) 113
मोहिनीअट्टम् (Mohiniattam) 114

ओडिसी (Odissi) 115

मणिपुरी (Manipuri) 116

कत्थक (Kathak) 116

सत्रिया नृत्य (Sattriya Dance) 118

7.4 भारत के लोक नृत्य (Folk Dances of India) 118

उत्तर प्रदेश के लोक नृत्य (Folk Dances of Uttar Pradesh) 119

राजस्थान के लोक नृत्य (Folk Dances of Rajasthan) 120

कश्मीर के लोक नृत्य (Folk Dances of Kashmir) 122

पंजाब के लोक नृत्य (Folk Dances of Punjab) 122

अरुणाचल प्रदेश के लोक नृत्य (Folk Dances of Arunachal Pradesh) 123

हरियाणा के लोक नृत्य (Folk Dances of Haryana) 123

महाराष्ट्र के लोक नृत्य (Folk Dances of Maharashtra) 123

गुजरात के लोक नृत्य (Folk Dances of Gujarat) 124

ओडिशा के लोक नृत्य (Folk Dances of Odisha) 124

मध्य प्रदेश के लोक नृत्य (Folk Dances of Madhya Pradesh) 125

मणिपुर के लोक नृत्य (Folk Dances of Manipur) 125

मिज़ोरम के लोक नृत्य (Folk Dances of Mizoram) 126

उत्तर-पूर्वी राज्यों के अन्य लोक नृत्य (Other Folk Dances of North-Eastern States) 126

भारत के सैन्य नृत्य (Martial Dances of India) 127

अध्याय 8

भारतीय रंगमंच (Indian Theatre) 130

8.1 शास्त्रीय संस्कृत रंगमंच (Classical Sanskrit Theatre) 130

8.2 प्रसिद्ध संस्कृत नाटककार (Famous Sanskrit Playwrights) 130

संस्कृत नाटकों के प्रकार (Types of Sanskrit Plays) 131

संस्कृत नाटक के तत्त्व (Elements of Sanskrit Play) 131

संस्कृत रंगमंच का पतन (Decline of Sanskrit Theatre) 131

8.3 भारतीय लोक रंगमंच (Indian Folk Theatre) 131

उत्तर भारत के रंगमंच (Theatres of Northern India) 132

पूर्वी भारत के रंगमंच (Theatres of Eastern India) 134

पश्चिमी भारत के रंगमंच (Theatres of Western India) 135

दक्षिणी भारत के रंगमंच (Theatres of Southern India) 135

अध्याय 9

भारतीय कठपुतली कला (Indian Puppetry) 138

9.1 भारत में कठपुतली संबंधी इतिहास (History associated with Puppetry in India) 138

9.2 कठपुतली के प्रकार (Types of Puppets) 138

दस्ताना कठपुतलियाँ (Glove Puppets) 139

डोरी/धागा कठपुतलियाँ (String Puppets) 139

छड़ कठपुतलियाँ (Rod puppets) 141

छाया कठपुतलियाँ (Shadow Puppets) 142

9.3 अन्य संबंधित जानकारी (Other Related Information) 143

यूनियन इंटरनेशनल डे ला मैरिओनेट (UNIMA) 143

डिजिटल कठपुतली (Digital puppetry) 143

अध्याय 10

यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (Unesco Intangible Cultural Heritage) 144

10.1 अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (Intangible cultural heritage) 144

10.2 कुटियट्टम (संस्कृत रंगमंच) [Kutiyattam (Sanskrit theatre)] 145

10.3 वैदिक मंत्रोच्चार की परंपरा (The Tradition of Vedic Chanting) 145

10.4 रामलीला – रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन (Ramlila – the Traditional Performance of the Ramayana) 145

10.5 नवरोज़ (Novruz) 146

10.6 रम्मण (Ramman) 146

10.7 छऊ नृत्य (Chhau Dance) 146

10.8 राजस्थान का कालबेलिया लोक गीत तथा नृत्य (Kalbelia folk songs and dances of Rajasthan) 147

10.9 मुडियेट्टु (Mudiyettu) 147

10.10 लद्दाख का बौद्ध मंत्रोच्चार (Buddhist Chanting of Ladakh) 147

10.11 मणिपुर का संकीर्तन (Sankirtana of Manipur) 148

10.12 पीतल एवं ताँबे के बर्तन (ठठेरा) [Brass and Copper Utensil (Thatheras)] 148
10.13 योग (Yoga) 148
10.14 कुंभ मेला (Kumbh Mela) 149

खंड- C : भारतीय संस्कृति

अध्याय 11

भारत के राष्ट्रीय प्रतीक
(National Symbols of India) 151

अध्याय 12

भारत में धर्म (Religions in India) 154
12.1 हिंदू धर्म (Hinduism) 154
उद्विकास (Evolution) 154
वैष्णववाद (Vaishnavism) 154
शैववाद (Shaivism) 155
शक्तिवाद (Shaktism) 155
स्मार्तवाद (Smartism) 155
वर्ण (Varnas) 155
आश्रम (Ashramas) 155
हिंदू ग्रंथ (Hindu texts) 155
हिंदू तीर्थस्थल (Hindu Pilgrimage) 156
श्रमण परंपराएँ (Shramana Traditions) 156
श्रमण परंपरा का दर्शन (Philosophy of Shramana Tradition) 156
12.2 जैन धर्म (Jainism) 156
सिद्धांत (Principles) 157
तीर्थंकर (Tirthankara) 157
जैन संप्रदाय (Jain Sects) 157
जैन साहित्य (Jaina Literature) 158
जैन अनुष्ठान (Jain Rituals) 158
12.3 बौद्ध धर्म (Buddhism) 159
गौतम बुद्ध (Gautama Buddha) 159
सिद्धांत (Principles) 159
बौद्ध धर्म की शाखाएँ (Branches of Buddhism) 160
हीनयान (Hinayana) 160
चार आर्य सत्य (The Four Noble Truths) 160
आर्य आष्टांगिक मार्ग (Noble Eightfold Path) 160
आचरण (Practices) 161
धर्मचक्र (Dharmachakra) 161
तिब्बती बौद्ध धर्म (Tibetan Buddhism) 161
12.4 सिक्ख धर्म (Sikhism) 163
सिक्ख धर्म के सिद्धांत (Principles of Sikhism) 163
खालसा और '5 ककार' (The Khalsa and five K's) 163
श्री गुरु ग्रंथ साहिब (Sri Guru Granth Sahib) 163
12.5 इस्लाम (Islam) 163
इस्लाम के सिद्धांत (Principles of Islam) 163
मौलिक इस्लामी मान्यताएँ (Basic Islamic Beliefs) 164
इस्लाम के मुख्य संप्रदाय (Main Sects of Islam) 164
खलीफ़ा (Khalifah) 164
इस्लाम के पैगंबर (Prophets of Islam) 164
पैगंबर मुहम्मद (Prophet Muhammad) 164
भारत में इस्लाम (Islam in India) 165
12.6 सूफ़ीवाद (Sufism) 165
उत्पत्ति (The Origin) 165
आधारभूत सिद्धांत (Fundamental principles) 165
समा (Sama) 165
12.7 दाऊदी बोहरा (Dawoodi Bohras) 166
12.8 ईसाई धर्म (Christianity) 166
उत्पत्ति (Origin) 166
ईसाई धर्म के मौलिक सिद्धांत (Fundamental principles of Christianity) 167
बाइबिल (Bible) 167
ईसाई संप्रदाय (Christian sects) 167
भारत में ईसाई धर्म (Christianity in India) 167
12.9 यहूदी धर्म (Judaism) 167
इतिहास (History) 168
मान्यताएँ एवं प्रथाएँ (Beliefs and Practices) 168
यहूदी संप्रदाय (Jewish sects) 168
भारत में यहूदी धर्म (Judaism in India) 168
12.10 पारसी धर्म (Zoroastrianism) 169
आचरण (Practices) 169
धार्मिक ग्रंथ (Religious Scriptures) 169
पारसी धर्म के संप्रदाय (Sects) 169
भारत का पारसी धर्म (Zoroastrians of India) 169

12.11 बहाई आस्था (Bahai Faith) 169
मान्यताएँ एवं प्रथाएँ (Beliefs and practices) 170
लोटस टेम्पल (The Lotus Temple) 170
12.12 भारत के धार्मिक तीर्थस्थल (Religious Pilgrimages of India) 170
अमरनाथ यात्रा (Amarnath Yatra) 170
हज (Hajj) 170
कुंभ मेला (Kumbh Mela) 171
अयप्पा मंदिर (Ayyappa Temple) 171
पुष्कर मेला (Pushkar Mela) 172
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का उर्स (Urs of Khwaja Moin-Ud-Din Chishti) 172

अध्याय 13

भारत में भाषाएँ (Languages in India) 174
13.1 भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण (Classification of Indian Languages) 174
भाषाएँ बनाम बोलियाँ (Languages vs. Dialects) 174
13.2 भाषाओं का इंडो-आर्यन समूह (Indo-Aryan Group of Languages) 174
प्राचीन इंडो-आर्यन समूह [Old Indo-Aryan Group (1500–300 BCE)] 174
मध्य इंडो-आर्यन भाषाएँ (Middle Indo-Aryan Languages) 175
आधुनिक इंडो-आर्यन भाषाएँ (Modern Indo-Aryan Languages) 175
13.3 द्रविड़ समूह (Dravidian Group) 175
13.4 चीनी-तिब्बती समूह (Sino-Tibetan Group) 175
तिब्बती-बर्मी (Tibeto-Burman) 175
स्यामी-चीनी (Siamese-Chinese) 176
13.5 नीग्रो समूह (Negroid Group) 176
13.6 ऑस्ट्रिक समूह (Austric Group) 176
13.7 अन्य (Others) 176
13.8 भारत की राजभाषा (Official Languages of India) 176
राज्यों की राजभाषा (Official Languages in States) 176
संघ और राज्यों के मध्य संचार की भाषा (Language of communication between Union and States) 176
न्यायालयों की भाषा (Language of courts) 177
हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु विशेष निर्देश (Special directive for promotion of Hindi) 177
प्रथम राजभाषा आयोग (First Official Language Commission) 177
13.9 अनुसूचित भाषाएँ (Scheduled languages) 177
13.10 शास्त्रीय भाषा का दर्जा (Status of Classical Language) 177
शास्त्रीय भाषाओं की माँग (Calls for Classical Languages) 177
भारत में शास्त्रीय भाषाओं के लिए मानदंड (Criteria for Classical Languages in India) 177
वर्तमान में शास्त्रीय भाषाएँ (Current Classical Languages) 178
इस दर्जे के लाभ (Benefits of the Status) 178
13.11 राष्ट्रीय अनुवाद मिशन (National Translation Mission) 178
13.12 भाषायी विविधता सूचकांक (Linguistic Diversity Index) 178

अध्याय 14

भारतीय मेले और त्योहार (Fairs and Festivals of India) 180
14.1 फ़सल उत्सव (Harvest Festivals) 180
14.2 संक्रांति (Sankranti) 180
उत्तर प्रदेश (Uttar Pradesh) 180
बंगाल (Bengal) 180
तमिलनाडु (Tamil Nadu) 180
आंध्र प्रदेश (Andhra Pradesh) 181
महाराष्ट्र (Maharashtra) 181
गुजरात (Gujarat) 181
पंजाब (Punjab) 181
बुंदेलखंड (Bundelkhand) 181
ओडिशा के आदिवासी (Tribals of Odisha) 181
केरल (Kerala) 181
असम (Assam) 181
14.3 नए वर्ष के त्योहार (New Year festivals) 182
उगादी (Ugadi) 182
गुड़ी पड़वा (Gudi Padwa) 182

पुथंडु (Puthandu) 182
विशु (Vishu) 182
नवरेह (Navreh) 183
महाविषुव संक्रांति (Maha Vishuva Sankranti) 183
बेस्तु वरस (Bestu Varas) 183
चैती और बसोआ (Chaitti and Basoa) 183
बैसाखी (Baisakhi) 183
नवरोज़ (Nowruz) 183

14.4 अन्य महत्त्वपूर्ण त्योहार (Other important festivals) 183
मे-दम-मे-फी महोत्सव (Me-Dam-Me-Phi festival) .. 183
खजुराहो नृत्य महोत्सव (Khajuraho Dance Festival) 184
सूरजकुंड शिल्प मेला (Surajkund Crafts Mela) 184
मथुरा के बरसाना की लट्ठमार होली (Lathmaar holi of Barsana in Mathura) 184
सरहुल (Sarhul) 184
चालिहा साहिब उत्सव (Chaliha Sahib Festival) 184

14.5 भारतीय मेले (Indian Fairs or Melas) 184
कुंभ मेला (Kumbh Mela) 185
हरिद्वार कुंभ मेला: गंगा, ... 185
बेणेश्वर/बागेश्वर मेला, राजस्थान (Baneshwar Fair, Rajasthan) 185
गणगौर महोत्सव, राजस्थान (Gangaur Festival, Rajasthan) 185
मरु महोत्सव, राजस्थान (Desert Festival, Rajasthan) 185
गरीब नवाज़ उर्स, राजस्थान (Garib Nawaz Urs, Rajasthan) 185
पुष्कर मेला, राजस्थान (Pushkar Fair, Rajasthan) 185
करणी माता मेला, बीकानेर, राजस्थान (Karni Mata Fair, Bikaner, Rajasthan) 186
तरनेतर मेला, गुजरात (The Tarnetar Fair, Gujarat) .. 186
गंगासागर मेला (Gangasagar Mela) 186

14.6 उत्तर-पूर्व भारत के त्योहार (Festivals of the North-East India) 186
लोसार महोत्सव, अरुणाचल प्रदेश (Losar Festival, Arunachal Pradesh) 186
तोरग्या महोत्सव, अरुणाचल प्रदेश (Torgya Festival, Arunachal Pradesh) 186
सागा दाव, सिक्किम का बौद्ध महोत्सव (Saga Dawa, Buddhist Festival of Sikkim) 186
लोसांग महोत्सव, सिक्किम (Losoong Festival, Sikkim) 187
बिहू महोत्सव (Bihu Festival) 187
हॉर्नबिल महोत्सव, नागालैंड (Hornbill Festival, Nagaland) 187
खारची महोत्सव, त्रिपुरा (Kharchi Festival, Tripura). 187
चेरोबा महोत्सव, मणिपुर (Cheiraoba Festival, Manipur) 187
वंगाला महोत्सव (Wangala Festival) 188
कांग चिंगबा महोत्सव (Kang Chingba Festival) 188
अंबुबाची मेला, असम (Ambubachi Mela, Assam) . 188
माजुली महोत्सव, असम (Majuli Festival, Assam) 188
सेक्रेनी महोत्सव (Sekrenyi Festival) 189
ड्री त्योहार (Dree Festival) 189
मुरुंग महोत्सव (Murung Festival) 189

अध्याय 15

भारत में जनजातियाँ (Tribes in India) 190

15.1 भारत में प्रजातियों की उत्पत्ति (The Origin of Races in India) 190
नीग्रो (Negritos) 190
आद्य-आस्ट्रेलियन या ऑस्ट्रिक्स (Pro-Australoids or Austrics) 190
मंगोलियन (Mongoloids) 190
भूमध्यसागरीय या द्रविड़ (Mediterranean or Dravidian) 190
पश्चिमी ब्रैचिसेफल्स (Western Brachycephals) 190
नॉर्डिक (Nordics) 190

15.2 अनुसूचित जनजाति परिभाषा (Scheduled Tribes Definition) 191

15.3 प्रमुख जनजातियों का राज्यवार वितरण (State-wise Arrangement of Major Tribes) 200
विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह (Particularly Vulnerable Tribal Groups–PVTGs) 200

अध्याय 16

दार्शनिक विचारधाराएँ (Schools of Philosophy) 203

16.1 भारतीय दर्शन (Indian Philosophy) 203

16.2 भारतीय दर्शन की विचारधाराएँ
(The Schools of Indian Philosophy)..................203
आस्तिक विचारधाराएँ (Orthodox Systems).............203
नास्तिक विचारधाराएँ (Heterodox Systems)............203

16.3 आस्तिक दार्शनिक विचारधाराओं के प्रमुख दर्शन
(Major sub-schools of the Orthodox School)....203
सांख्य (Samkhya)...203
योग दर्शन (Yoga School)....................................204
वैशेषिक दर्शन (Vaisheshika School)....................205
न्याय दर्शन (Nyaya School).................................205
मीमांसा दर्शन (Mimamsa School).........................205
वेदांत दर्शन (Vedanta School).............................206

16.4 नास्तिक दार्शनिक विचारधाराओं के अंतर्गत तीन दर्शन
(Three Sub-schools under the Heterodox School)..207
बौद्ध दर्शन (Buddhist Philosophy).......................207
जैन दर्शन (Jaina Philosophy)..............................208
चार्वाक या लोकायत दर्शन
(Charvaka School or Lokayata Philosophy)......208

अध्याय 17

युगों से विज्ञान और प्रौद्योगिकी
(Science and Technology Through the Ages) 210

17.1 प्राचीन भारत में विकास
(Developments in Ancient India)......................210
गणित और खगोल विज्ञान के क्षेत्र
(Fields of Mathematics & Astronomy)...............210
विज्ञान के क्षेत्र (Field of Science).........................211
चिकित्सा विज्ञान का क्षेत्र, आयुर्वेद एवं योग
[Field of Medical Science (Ayurveda & Yoga)].. 211

17.2 मध्यकालीन भारत में विकास
(Developments in Medieval India)....................212
गणित का क्षेत्र (Field of Mathematics) 212
जीव-विज्ञान का क्षेत्र (Field of Biology)..................212
रसायन विज्ञान का क्षेत्र (Field of Chemistry) 212
खगोल विज्ञान का क्षेत्र (Field of Astronomy)...........213
चिकित्सा क्षेत्र (Field of Medicine) 213
कृषि क्षेत्र (Field of Agriculture)...........................213

17.3 आधुनिक भारत में विकास और वैज्ञानिक
(Developments & Scientists in Modern India) ..213
श्रीनिवास रामानुजन
(Srinivasa Ramanujan :1887-1920) 213
चंद्रशेखर वी. रमन (1888-1970)
(Chandrasekhara V. Raman: 1888-1970).........214
जगदीश चंद्र बोस
(Jagdish Chandra Bose: 1858-1937) 214
होमी जहाँगीर भाभा
(Homi Jehangir Bhabha: 1909-1966) 214
डॉ. विक्रम अंबालाल साराभाई
(Dr. Vikram Ambalal Sarabhai: 1919-1970)......215
डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
(Dr. A.P.J. Abdul Kalam)..................................215

अध्याय 18

भारतीय सर्कस (Indian Circus)..216

18.1 सर्कस: एक सीमांत उद्योग (A Marginal Industry).....216

खंड- D : विविध

अध्याय 19

भारतीय सिनेमा (Indian Cinema)....................................218

19.1 केंद्रीय फ़िल्म प्रमाणन बोर्ड
(Central Board of Film Certification).................218

19.2 राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम लिमिटेड
(National Film Development Corporation Limited) 219

19.3 फ़िल्म समारोह निदेशालय
(Directorate of Film Festivals)...........................219

19.4 भारत का राष्ट्रीय फ़िल्म पुरालेख
(National Film Archive of India) 219

19.5 बाल चित्र समिति, भारत
(Children's Film Society, India).........................219

अध्याय 20

भारत में सिक्के (Coinage in India) 220

अध्याय 21

भारतीय कैलेंडर (Indian Calendar).................................222

अध्याय 22

भारत के सांस्कृतिक संस्थान
(Cultural Institutions)...223

22.1 राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन
(National Mission for Manuscripts)...................223

22.2 भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत ट्रस्ट
(INTACH)...223

अध्याय 23

साहित्य (Literature) 224

अध्याय 24

भारत में मार्शल आर्ट (युद्ध कला)
(Martial Arts) 226

अध्याय 25

प्राचीन भारत के बंदरगाह
(Ports of Ancient India) 228

अध्याय 26

यात्री/राजदूत (Travellers) 230

अध्याय 27

भारतीय काँस्य मूर्तिकला (Indian Bronze Sculpture) 232

27.1 उत्तर भारत (North India) 232

27.2 दक्षिण भारत (South India) 232

27.3 नटराज मूर्ति (Nataraja) 233

अध्याय 28

सामयिकी (Current Affairs) 234

28.1 भारतीय वास्तुकला
(Indian Architecture) 234

28.2 भारतीय हस्तशिल्प
(Indian Handicraft) 238

28.3 भारतीय संगीत (Indian Music) 238

28.4 भारतीय नृत्य (Dances of India) 239

28.5 भारत में धर्म (Religions in India) 239

28.6 भारत में भाषाएँ (Languages in India) 240

28.7 भारतीय मेले और त्योहार
(Fairs and Festivals of India) 241

28.8 भारत में जनजातियाँ (Tribes in India) 243

28.9 योजनाएँ (Schemes) 244

खंड A

दृश्य कला
(Visual Art)

अध्याय 1

भारतीय वास्तुकला (Indian Architecture)

भारतीय वास्तुकला (स्थापत्य कला) एक लंबे समय-काल की अभिव्यक्ति है, जो अनेक शताब्दियों में क्रमिक रूप से विकसित हुई है। यह अपने इतिहास, धर्म, संस्कृति, भूगोल और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से अत्यंत निकटता से जुड़ी हुई है। इन समस्त आयामों के दृष्टिकोण से देखें, तो भारत में अत्यधिक विविधता व्याप्त है और यह विविधता भारतीय स्थापत्य शैली में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस अध्याय में भारतीय वास्तुकला के प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक के विकास पर विस्तारपूर्वक चर्चा की जाएगी।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से भारतीय वास्तुकला संबंधी संपूर्ण खंड को हमने निम्नलिखित तीन वर्गों में विभक्त किया है-

- प्राचीन भारत में वास्तुकला
- मध्यकालीन भारत में वास्तुकला
- आधुनिक भारत में वास्तुकला

1.1 प्राचीन भारत में वास्तुकला (Architecture in Ancient India)

यद्यपि मृद्भांडों (Pottery), मूर्तिकला (Sculpture) इत्यादि कला रूपों ने प्रागैतिहासिक काल में ही आकार ले लिया था, लेकिन वास्तुकला का वर्तमान स्वरूप सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान नगर नियोजन (Town planing) के रूप में अस्तित्व में आया।

सिंधु घाटी सभ्यताकालीन वास्तुकला (Architecture during Indus Valley Civilization)

- सिंधु घाटी सभ्यता का काल मूलतः 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व तक माना जाता है। इस दौरान वास्तुकला के रूप में विभिन्न विशाल इमारतों का निर्माण हुआ। सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण स्थल प्राप्त हुए हैं। इन स्थलों की अपनी कुछ अनूठी वास्तुकलात्मक विशेषताएँ हैं, तो साथ ही उनमें कुछ समानताएँ भी विद्यमान हैं। पुरातात्विक प्रमाणों से सिद्ध होता है कि इस दौरान एक समृद्ध नगरीय स्थापत्य शैली मौजूद थी। इस काल की नगरीय वास्तुकला की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत् हैं-
- सिंधु घाटी सभ्यता के शहरों का विभाजन सामान्यतः दो भागों में किया गया था। ये थे- ऊपरी शहर और निचला शहर। ऊपरी शहर को 'दुर्ग' कहा जाता था। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है-

  i. **ऊपरी शहर/दुर्ग** (Upper Town/Citadel): इस भाग का क्षेत्रफल अपेक्षाकृत कम तथा ऊँचाई अधिक (लगभग 40-50 फीट अधिक ऊँचा) होती थी। यह हिस्सा शहर के पश्चिमी भाग में अवस्थित होता था। शहर के इस भाग में समाज का उच्च वर्ग निवास करता था।

चित्र: सिंधु घाटी सभ्यता का दुर्ग क्षेत्र

  ii. **निचला शहर** (Lower Town): दुर्ग की तुलना में इसका क्षेत्रफल अधिक होता था, लेकिन इसकी ऊँचाई दुर्ग की अपेक्षा कम होती थी। मैदानी भाग में अवस्थित एक क्षेत्र शहर के पूर्वी हिस्से में स्थित होता था। शतरंज के बोर्ड की भाँति निचले शहर को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया गया था। शहर के इस भाग में समाज का निम्न वर्ग निवास करता था।

- शहर को एक नियमित 'ग्रिड प्रणाली' (Grid Pattern) के आधार पर समांतर चतुर्भुज के रूप में बसाया गया था।
- भवनों के निर्माण में बड़े पैमाने पर पक्की ईंटों का उपयोग किया गया था। ये ईंटें एक निश्चित माप (4×2×1) की होती

थीं। अत: निर्माण कार्य में पत्थरों की अनुपस्थिति के कारण सिंधु घाटी सभ्यता के भवन अपने आप में अनूठे थे।

- इन ईंटों को प्लास्टर से लेपित किया जाता था। इसके अलावा, प्राकृतिक टार (Natural Tar) या जिप्सम का प्रयोग करके इन्हें जलरोधी (Water Tight) भी बनाया जाता था।
- घरों के निर्माण में कच्ची ईंटों, जबकि स्नानघरों और नालियों के निर्माण में पक्की ईंटों का प्रयोग किया जाता था और जिप्सम के माध्यम से इन्हें जलरोधी भी बनाया जाता था।

• शहरों को योजनाबद्ध तरीके से बसाया जाता था तथा उनकी वास्तुशिल्प विधि सावधानीपूर्वक तैयार की जाती थी। सिंधु घाटी सभ्यता के शहरों की प्रमुख वास्तुशिल्प विशेषताएँ निम्नलिखित थीं-

- **निरीक्षण छिद्रों से युक्त भूमिगत जल निकासी** (Underground Drainage with Inspection Holes): उत्कृष्ट जल निकासी प्रणाली इस सभ्यता की सबसे प्रमुख विशेषता थी। प्रत्येक घर से छोटी-छोटी नालियाँ निकलती थीं, जो मुख्य सड़क के साथ-साथ बहने वाली नालियों से जुड़ी होती थीं। भूमिगत नालियों के शीर्ष पर एक निरीक्षण छिद्र भी बनाया जाता था, जिसका मुख्य उद्देश्य नियमित रूप से नालियों की सफाई व रख-रखाव करना होता था। नीचे दर्शाया गया चित्र घरों में जल निकासी प्रणाली को प्रदर्शित करता है।

चित्र: मोहनजोदड़ो से प्राप्त जल निकासी प्रणाली

• सभी सड़कें उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम की ओर एकदम सीधी होती थी और वे आपस में एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं।

• दुर्ग क्षेत्र में अनेक प्रकार की इमारतें उपस्थित थीं। इनमें मुख्यत: विशाल स्नानागार, अन्नागार, स्तंभयुक्त सभागार कक्ष इत्यादि।

- **विशाल स्नानागार** (Great Bath): सिंधु घाटी सभ्यता के 'मोहनजोदड़ो' नामक स्थल से एक विशाल स्नानागार प्राप्त हुआ है। इस स्नानागार में एक अद्‌भुत जलचालित प्रणाली (Hydraulic System) मौजूद थी। यह दर्शाता है कि उस समय सार्वजनिक स्नान की प्रथा प्रचलित थी तथा इस विशाल स्नानागार का कोई आनुष्ठानिक महत्त्व (Ritualistic Significance) रहा होगा।

चित्र: मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक विशाल स्नानागार

• एक बड़े खुले चतुर्भुजाकार क्षेत्र के केंद्र में स्नानागार बना हुआ था, जो चारों ओर अनेक कमरों से घिरा हुआ था। यह स्नानागार अपने चारों ओर बने कमरों से सीढ़ियों के माध्यम से जुड़ा हुआ था। इस स्नानागार के पास एक कुआँ मौजूद था, जिसका उपयोग स्नानागार में पानी भरने के लिए किया जाता था। स्नानागार का पानी 'कॉर्बेल्ड निकास' (Corbelled Drain) के माध्यम से शहर के वाहितमल प्रवाह तंत्र में चला जाता था। 'कॉर्बेल' (Corbel) वस्तुत: वास्तुकला में एक विशिष्ट प्रकार का डिज़ाइन होता है, जिसका प्रयोग सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान स्नानागार से जल निकासी के लिए किया जाता था।

• **अन्नागार** (Granaries): अन्न के भंडारण के लिए ऊँचे प्लेटफॉर्म पर अन्नागार का निर्माण किया जाता था। इनमें रणनीतिक रूप से वायु नलिकाओं (Air Duct) का निर्माण भी किया जाता था, ताकि अन्न को लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सके। निर्माण कला में इस प्रकार की वैज्ञानिक प्रणाली का प्रयोग सैंधव लोगों की बौद्धिकता का परिचायक है। मोहनजोदड़ो से इसी प्रकार का एक विशाल अन्नागार प्राप्त हुआ है। इसके अलावा, हड़प्पा जैसे कुछ स्थलों से छह अन्य अन्न भंडार भी प्राप्त हुए हैं।

• **स्तंभयुक्त सभागार कक्ष** (Pillared Assembly Hall): पुरातात्विक साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि पाँच की पंक्तियों में व्यवस्थित 20 स्तंभों वाला एक सभागार कक्ष मौजूद था। इन स्तंभों पर एक विशाल छत का निर्माण किया गया था। संभवत: यह इमारत नगर मजिस्ट्रेट के न्यायालय या राज्य के सचिवालय के रूप में कार्य करती थी।

चित्र: स्तंभयुक्त सभागार कक्ष

- कुछ शोधकर्ताओं का मानना है कि निचले शहर में अलग-अलग आकार के घर थे। इससे पता चलता है कि लोगों की आर्थिक स्थिति एकसमान नहीं थी। धनी लोगों के पास निजी कुएँ और शौचालय उपलब्ध थे। अर्थात् अमीरों और गरीबों में वर्गभेद मौजूद था।
- किसी भी घर की खिड़कियाँ मुख्य सड़क की ओर नहीं होती थीं। यहाँ तक कि घर का प्रवेशद्वार भी मुख्य सड़क पर नहीं होता था।
- अधिकांश भवन पर्याप्त रूप से हवादार (Ventilated) होते थे। सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान बनने वाले भवन एक कमरे से लेकर दो मंज़िला तक होते थे।
- नीचे दिए गए चित्र में सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान निर्मित होने वाले गृह के निर्माण योजना का प्रारूप दर्शाया गया है-

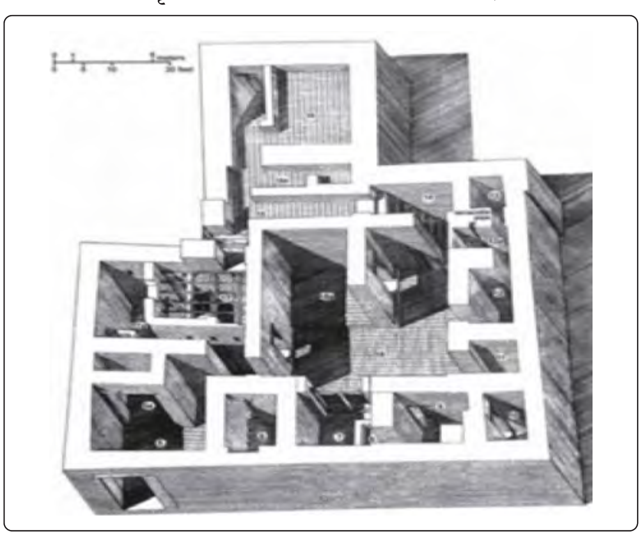

चित्र: गृह निर्माण योजना का प्रारूप

प्रमुख सैंधव स्थल व वहाँ से प्राप्त विभिन्न संरचनाएँ (Important Indus Sites and Various Structures Found from There):

- हड़प्पा (Harappa):
  - शवाधान पेटिका
  - दुर्ग क्षेत्र के बाहर स्थित अन्न भंडार
  - लिंग पूजा (Phallus Worship)
  - कब्रिस्तान
  - मातृदेवी की प्रतिमा
- मोहनजोदड़ो (Mohenjodaro):
  - निर्मित वस्त्र
  - महल जैसा मंदिर
  - पशुपति की मुहर
  - नर्तकी की काँस्य प्रतिमा
  - हाथी दाँत से निर्मित तराज़ू भार संतुलन
  - विशाल स्नानागार
  - वृहत् अन्नागार
  - पुजारी राजा की प्रतिमा
- कालीबंगा (Kalibangan):
  - निचला किलाबंद शहर
  - अग्नि वेदिका (Fire Attar)
  - बौस्ट्रोफेडन (Boustrophedon) लेखन शैली
  - काष्ठ निर्मित जल निकासी प्रणाली
  - ताँबे का बैल
  - भूकंप के साक्ष्य
  - लकड़ी का हल
  - ऊँट की हड्डी
  - जुते हुए खेत के साक्ष्य
- लोथल (Lothal):
  - बंदरगाह शहर
  - चावल के साक्ष्य
  - अग्निकुंड के साक्ष्य
  - कब्रिस्तान
  - हाथी दाँत से निर्मित तराज़ू
  - ताँबे का कुत्ता (Copper dog)
- रंगपुर (Rangpur):
  - चावल के साक्ष्य
- सुरकोटदा (Surkotada):
  - घोड़े की हड्डी
  - पत्थर से ढकी कब्र
- मालवण (Malvan):
  - कार्नीलियन मनके
  - ताँबे व काँसे के उपकरण

- चन्हूदड़ो (Chanhudaro):
  - मनका निर्माण का कारखाना
  - स्याही की दवात
  - बिना दुर्ग वाला सैंधव सभ्यता का एकमात्र स्थल
  - बैठे हुए चालक वाली गाड़ियाँ (Cart with Seated Driver)
- दैमाबाद (Daimabad):
  - काँसे का भैंसा
- आमरी (Amri):
  - गैंडे के वास्तविक साक्ष्य
- आलमगीरपुर (Alamgirpur):
  - गर्त पर कपड़े की छाप (Impression of Cloth on a Trough)
- रोपड़ (Ropar):
  - पत्थर और मिट्टी से निर्मित भवन
  - मानव के साथ कुत्ते को दफ़नाने के साक्ष्य
  - सिंधु सभ्यता की विशिष्ट चित्राक्षर लिपि में उत्कीर्णित स्टीटाइट मोहर (Steatite Seal)
  - अंडाकार गड्ढे में दफ़नाने के साक्ष्य
- बनावली (Banawali):
  - अंडाकार बस्ती
  - घुमावदार सड़कों (Radial Street) वाला एकमात्र सैंधव शहर
  - हल का खिलौना
  - जौ के दानों की सर्वाधिक संख्या
- धौलावीरा (Dholavira):
  - तीन भागों में विभाजित एकमात्र शहर
  - विशाल जलाशय
  - विशिष्ट जल संचयन प्रणाली
  - बाँध
  - एक स्टेडियम

1.2 मौर्यकालीन वास्तुकला (Mauryan Architecture)

321 ईसा पूर्व से 185 ईसा पूर्व तक मौर्य साम्राज्य ने भारतीय उप-महाद्वीप के अधिकांश भाग में शासन किया। इस दौरान मौर्य शासकों ने एक महान वास्तुकला के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। सिंधु घाटी सभ्यता के बाद इसी कालखंड में आकर एक परिपक्व वास्तुकला आकार ले सकी थी। इस काल में निर्मित वास्तुकला के अंतर्गत विभिन्न स्तंभ, स्तूप और गुफ़ाएँ शामिल थीं। इन वास्तुशिल्पों का निर्माण मौर्य शासकों, विशेषकर अशोक के संरक्षण में हुआ था। यह अवधि भारतीय वास्तुकला की दृष्टि से एक संक्रमण का काल थी। इस दौरान वास्तुकलाओं के निर्माण हेतु लकड़ी की अपेक्षा पत्थर का प्रयोग किया जाने लगा था। शायद यही कारण है कि सिंधु घाटी सभ्यता और मौर्यकाल के बीच के लंबे कालखंड से संबंधित हमें वास्तुशिल्प के कोई उल्लेखनीय अवशेष प्राप्त नहीं होते हैं।

स्तंभ (Pillars)

स्तंभों को मौर्य काल में निर्मित सबसे आकर्षक वास्तुशिल्प माना जा सकता है। कभी-कभार इन स्तंभों को धार्मिक स्तंभों के रूप में भी संदर्भित किया जाता है। कुछ स्तंभों से ज्ञात होता है कि अशोक ने बौद्ध धर्म से संबंधित विभिन्न स्थलों की तीर्थ यात्रा भी की थी। इस काल में निर्मित हुए स्तंभों की प्रमुख संरचनात्मक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- **स्वतंत्र रूप से खड़े स्तंभ** (Free Standing Columns): इसका आशय है कि इन स्तंभों का उपयोग किसी संरचना को सहारा देने के लिए नहीं किया गया था।

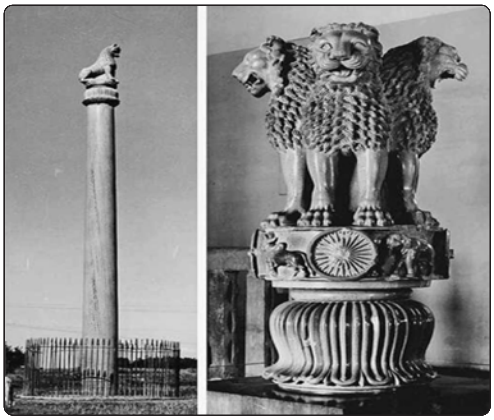

चित्र: मौर्यकालीन स्तंभ

- स्तंभों की विशेषताएँ (Characteristics of Pillars):
  - मौर्यकालीन स्तंभ एकाश्म पत्थर (Monolithic) की संरचनाएँ हैं, अर्थात् ये स्तंभ एक ही शिलाखंड को तराशकर बनाए गए हैं। इनका निर्माण करने के लिए किन्हीं दो या अधिक शिलाखंडों को आपस में जोड़ा नहीं गया है।
  - स्तंभ का मुख्य भाग 'लाट' (Shaft) कहलाता है। यह बहुत आधार की ओर मोटा होता है, जबकि ऊपर की तरफ क्रमशः पतला होता जाता है। स्तंभ के ऊपरी भाग को 'शीर्ष' कहा जाता है। स्तंभ पर एक खास तरह की पॉलिश (ओप) की गई है, जिसके कारण स्तंभ के स्वरूप में धातु जैसी चमक आ गई है।
  - शीर्ष के ऊपर एकल या दोहरी मेखला निर्मित की गई है और मेखला के ऊपर 'अवांगमुखी कमल' या 'उल्टे खिले हुए कमल' (Inverted Lotus) की आकृति बनाई गई है।

- इस अवांगमुखी कमल के ऊपर एक चौकी या प्लेटफॉर्म रूपी संरचना (Abacus) का निर्माण किया गया है। इस चौकीनुमा संरचना पर विभिन्न पशुओं की आकृतियाँ उकेरी गई हैं। आरंभिक स्तंभों में यह चौकी चौकोर तथा सादी (Plain) बनी होती थी, लेकिन परवर्ती स्तंभों में गोलाकार व नक्काशीदार चौकी का निर्माण किया जाने लगा।

मौर्यकालीन स्तंभ कला की अन्य प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- ये स्तंभ वाराणसी के निकट स्थित चुनार से प्राप्त लाल बलुआ पत्थर (Sand stone) से निर्मित किए गए हैं।
- चूँकि ये स्तंभ एकाश्म (Monolithic) हैं, इसीलिए इन्हें ईरानी स्तंभों (Archemanian Pillars) से भिन्न माना जाता है। वस्तुतः ईरानी स्तंभ एकाश्म नहीं हैं, बल्कि ये विभिन्न शिलाखंडों को जोड़कर बनाए गए हैं।
- इन स्तंभों का कोई आधार नहीं है और ये बेलनाकार स्वरूप में नीचे से ऊपर की ओर क्रमशः पतले होते गए हैं।
- स्तंभों के सभी भागों को गोलाकार स्वरूप में उत्कीर्णित (Inscribed) किया गया है, इसलिए किसी भी दिशा से देखने पर ये एकसमान प्रतीत होते हैं।
- मौर्य सम्राट अशोक द्वारा अपने पूरे साम्राज्य में ये स्तंभ या तो बुद्ध के जीवन से जुड़े किसी पवित्र स्थल को चिह्नित करने के लिए या किसी महान घटना की स्मृति में बनाए गए थे। अशोक ने धम्म का प्रचार करने या शाही उपदेशों को लोगों तक पहुँचाने के लिए भी साम्राज्य के अनेक हिस्सों में स्तंभों का निर्माण कराया था। इन शिलालेखों से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारी निम्नलिखित बॉक्स में दी गई है-

अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप द्वारा पढ़ा गया। अशोक के अधिकांश अभिलेख पाली भाषा में उत्कीर्णित हैं, मगर कुछ स्थानों पर प्राकृत भाषा का प्रयोग भी हुआ है। भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अशोक के अभिलेखों में अलग-अलग लिपियों का प्रयोग किया गया है, जो निम्नानुसार हैं-

- उत्तर-पश्चिम भारत: खरोष्ठी लिपि
- पश्चिमी भारत: यूनानी और अरामाइक लिपि
- शेष भारत: ब्राह्मी लिपि

खरोष्ठी लिपि में उत्कीर्ण किए गए अशोक के अभिलेखों पर ईरानी वास्तुकला का प्रभाव दिखाई देता है। दरअसल, अभिलेख जारी करने का विचार मूल रूप से ईरान का ही है।

- सारनाथ के प्रसिद्ध स्तंभ का निर्माण भी इसी काल में हुआ था, जिसका शीर्ष भाग (Capital) अत्यंत भव्य है। इसे आधुनिक भारतीय गणराज्य के राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न के रूप में अपनाया गया है। इसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-
  - स्तंभ के शीर्ष भाग का सबसे निचला हिस्सा अवांगमुखी कमल (Inverted Lotus) की भाँति घुमावदार है। इसके ऊपर एक चौकी बनी है, जिस पर चार पशुओं के चित्र उत्कीर्ण किए गए हैं। ये पशु हैं- हाथी, घोड़ा, बैल (साँड) और शेर। इनमें से प्रत्येक पशु का अपना एक अनूठा महत्त्व है।

(a) **शेर:** कई प्राचीन परंपराओं में शेर को शक्ति का प्रतीक माना गया है, लेकिन यहाँ पर शेर का संदर्भ बुद्ध से स्थापित किया गया है। बुद्ध को 'शाक्य सिंह' (शाक्यों के बीच शेर) कहा जाता है।

(b) **हाथी:** इसे बुद्ध के जन्म का प्रतीक माना गया है।

(c) **बैल:** बैल को प्रजनन क्षमता का प्रतीक माना गया है।

(d) **घोड़ा:** इसे बुद्ध के गृह त्याग का प्रतीक माना गया है।

(e) **तीलियों से युक्त चक्र** (Spoked Wheel)**:** स्तंभ की चौकी पर निर्मित प्रत्येक पशु के बीच एक तीलियों से युक्त चक्र का निर्माण भी किया गया है। इन चक्रों को 'धर्मचक्र' की संज्ञा दी गई है। स्तंभ में उत्कीर्णित ये चक्र एक पहिए की भाँति किसी अदृश्य वाहन को खींचते हुए प्रतीत होते हैं।

- इस काल में निर्मित स्तंभ कला के अन्य प्रमुख उदाहरण इस प्रकार हैं- वैशाली के स्तंभ, लौरिया नंदनगढ़ के स्तंभ, रामपुरवा स्तंभ इत्यादि।

स्तूप (Stupas)

- स्तूप के भीतर, केंद्रीय कक्ष में स्थित एक ताबूत में बुद्ध के अवशेष संरक्षित होते थे। समय के साथ-साथ स्तूप को स्वयं बुद्ध का प्रतिनिधित्व करने वाले एक प्रकार के वास्तुशिल्प निकाय (Architectectural body) के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। स्तूप का आधार क्रॉस किए हुए पैरों का प्रतिनिधित्व करता है, मध्य भाग शरीर का प्रतिनिधित्व करता है, और शीर्ष भाग सिर का प्रतिनिधित्व करता है। हालाँकि, स्तूप की अवधारणा मूलतः बौद्ध धर्म की नहीं है। स्तूप शब्द का उल्लेख ऋग्वेद अथर्ववेद, वाजसनेयी संहिता, तैत्तिरीय संहिता आदि में मिलता है।

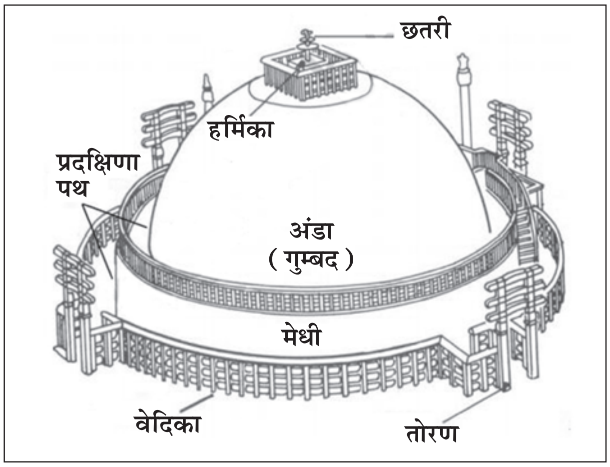

चित्रः स्तूप और उसके विभिन्न घटक

- मौर्य सम्राट अशोक ने आधिकाधिक बौद्ध स्तूपों का निर्माण करवाया और उसने इसे बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के तरीके के रूप में अपनाया। कुछ लोगों का मत है कि अशोक ने अपने साम्राज्य में लगभग 84,000 स्तूपों का निर्माण करवाया था। ऐसा कहा जाता है कि अशोक ने बुद्ध के पार्थिव शरीर की राख को अनेक हिस्सों में बाँटकर इन बौद्ध स्तूपों का निर्माण करवाया था।

अशोक द्वारा निर्मित स्तूपों में साँची का स्तूप सबसे प्रसिद्ध है। इस स्तूप की प्रमुख विशेषताएँ निम्नानुसार हैं-

- स्तूप में एक गुंबदनुमा अर्ध-गोलाकार संरचना होती है। यह संरचना उल्टे कटोरे की भाँति एक चबूतरे पर निर्मित होती है। इस अर्ध-गोलाकार संरचना को 'अंड' (Anda) कहा जाता है।
- गुंबद के शीर्ष भाग को लकड़ी या पत्थर की छतरीनुमा संरचना से सजाया गया है। यह संरचना धर्म की सार्वभौमिक सर्वोच्चता (Universal supremacy) को दर्शाती है। इस संरचना में तीन छत्र निर्मित किए गए हैं, जो बौद्ध धर्म के त्रिरत्नों - बुद्ध, धम्म और संघ - का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये तीनों छत्र एक ऊर्ध्वाधर दंड के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।
- स्तूप का मुख्य भाग कच्ची ईंटों से, जबकि बाहरी भाग पक्की ईंटों से बना हुआ है, जिस पर प्लास्टर की मोटी परत चढ़ाई गई है।
- इस स्तूप को एक 'प्रदक्षिणा पथ' (Pradakshina Path) से घेरा गया है।
- इस काल में निर्मित किए गए अन्य प्रमुख स्तूपों में अमरावती स्तूप (आंध्र प्रदेश), भरहुत स्तूप (सतना, मध्य प्रदेश), गांधार स्तूप, पिपरहवा स्तूप (उत्तर प्रदेश), बैराठ स्तूप (राजस्थान) इत्यादि शामिल हैं।

गुफ़ाएँ (Caves)

मौर्यकाल में निर्मित गुफ़ाएँ भी वास्तुकला का एक अद्भुत नमूना प्रस्तुत करती हैं। इन गुफ़ाओं का निर्माण मुख्यत: बौद्ध भिक्षुओं के निवास हेतु कराया गया था। इस काल में शैलकृत स्थापत्य (Rock-Cut Architecture) के निर्माण की शुरुआत हुई थी। इन गुफ़ाओं का आंतरिक भाग एक दर्पण की भाँति अत्यंत पॉलिशदार था।

मौर्यकाल में निर्मित कुछ प्रमुख गुहा स्थापत्य संरचनाओं के उदाहरण हैं- गया के उत्तर में स्थित बराबर पहाड़ी गुफ़ाएँ, नागार्जुनी पहाड़ी गुफ़ाएँ, सुदामा गुफ़ाएँ, गोपी गुफ़ाएँ इत्यादि। अपने निर्माण की दृष्टि से यह गुफ़ाएँ अत्यंत साधारण हैं, लेकिन इनका अंदरूनी भाग अत्यंत पॉलिशदार है।

लोमस ऋषि गुफ़ा (बराबर पहाड़ी गुफ़ा के समान) इस काल में निर्मित एकमात्र ऐसी गुफ़ा है, जिसके प्रवेशद्वार पर नक्काशी के माध्यम से मूर्तिकला का अलंकरण किया गया है।

चित्र: लोमस ऋषि गुफ़ा

बराबर पहाड़ी की गुफ़ाएँ अशोक द्वारा आजीवक संप्रदाय के भिक्षुओं को दान में दी गई थीं। इसके अलावा, अशोक के पौत्र दशरथ ने नागार्जुनी पहाड़ी में निर्मित गुफ़ाएँ आजीवक संप्रदाय के भिक्षुओं को दान दी थीं। बिहार में गया के निकट बराबर पहाड़ी में 4 गुफ़ाएँ और नागार्जुनी पहाड़ी में 3 गुफ़ाएँ निर्मित हैं। इन गुफ़ाओं को सम्मिलित रूप से 'सात बहनों' (Seven sister) की संज्ञा दी जाती है।

महल और आवासीय भवन (Palaces and Residential Buildings)

- मौर्यकालीन महलों और आवासीय भवनों की वास्तुकला इतनी शानदार और उच्च स्तरीय थी कि उनके संदर्भ में फाह्यान ने टिप्पणी की थी कि "इस दुनिया का कोई भी मानव इन्हें हाथ से निर्मित नहीं कर सकता है।"
- मौर्यकालीन महल के सुनहरे स्तंभ सुनहरी लताओं (Golden Vines) और चाँदी के पक्षियों (Silver Birds) से सुशोभित थे।
- इसका सर्वोत्तम उदाहरण कुम्हरार में स्थित एक शाही सभा भवन है। यह सभा भवन अनेक स्तंभों वाला एक विशाल कक्ष है। मौर्यकाल में भवनों के निर्माण हेतु प्रयुक्त मुख्य निर्माण सामग्री 'लकड़ी' (Wood) थी।

1.3 मौर्योत्तरकालीन वास्तुकला (Post-Mauryan Architecture)

200 ईसा पूर्व से 300 ईसवी तक का काल सामान्यत: मौर्योत्तर काल के रूप में जाना जाता है। इस दौरान शुंग, सातवाहन, हिंद-यवन (Indo-Greeks), शक, कुषाण जैसे शासकों ने शासन किया था।

मौर्योत्तरकालीन वास्तुकला की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- यह एक संरचनात्मक कला (Structural art) है, अर्थात् इसके अंतर्गत विभिन्न वास्तुशिल्प संरचनाओं का निर्माण किया गया था। इसके अंतर्गत निर्मित की गई संरचनाओं में स्तूप, चैत्य,

विहार, मंदिरों के प्रवेशद्वार, रेलिंग और उनके अग्रभाग इत्यादि शामिल थे।

- इसके अंतर्गत दैवीय और अर्ध-दैवीय प्राणियों से संबंधित मिथकों और किंवदंतियों के दृश्यों का वर्णन किया गया है।
- मौर्योत्तरकालीन वास्तुकला के अंतर्गत विभिन्न चिह्नों और प्रतीकों को भी दर्शाया गया है।
- इसे जन-सामान्य की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली मौर्यकालीन कला से भी अधिक लोकप्रिय कला माना जाता है।

मौर्योत्तर काल में भी स्तूपों और गुफ़ाओं का निर्माण होता रहा, लेकिन उनके स्वरूप में थोड़ा परिवर्तन आ गया। अब स्तूपों का निर्माण विस्तार किया जाने लगा, उनकी ऊँचाई में वृद्धि की गई और उनके प्रवेशद्वारों व तोरणों पर सुंदर नक्काशी भी की गई।

पहले की अपेक्षा अब गुफ़ाओं का उपयोग दो प्रमुख उद्देश्यों के लिए किया जाने लगा। चैत्यों का उपयोग अब बौद्ध भिक्षुओं द्वारा एक प्रार्थना कक्ष के रूप में किया जाने लगा, जैसे- महाराष्ट्र का कार्ले चैत्य।

चित्र: कार्ले चैत्य

इसके अलावा, विहारों का उपयोग बौद्ध भिक्षुओं द्वारा विश्राम स्थल व निवास स्थल के रूप में किया जाने लगा, जैसे- नासिक विहार, अजंता गुफ़ाएँ। इनकी संरचना कुछ इस प्रकार निर्मित की गई थी, जैसे अनेक कमरे एक सीधी रेखा में बनाए गए हैं तथा उनके सामने स्तंभों की एक रेखा बनाई गई है।

अजंता की चट्टानों को काटकर बनाई गई प्राचीन बौद्ध गुफ़ाएँ इसी काल के दौरान बनाई गई थीं। इन गुफ़ाओं का निर्माण पहाड़ी को क्रमशः ऊपर से नीचे की ओर नक्काशी करते हुए बनाया गया था। ऐसा माना जाता है कि अजंता की गुफ़ा संख्या 10 में अजंता का सबसे पुराना चैत्य कक्ष मौजूद है।

चित्र: अजंता गुफ़ाएँ

1.4 संगम वास्तुकला (Sangam Architecture)

संगम काल की समयावधि व्यापक तौर पर 300 ईसा पूर्व से लेकर 300 ई तक मानी जाती है। इस काल के प्रमुख राजवंशों में आरंभिक चोल, चेर और पांड्य साम्राज्य शामिल थे।

इस दौरान निर्मित किए गए मंदिरों के प्रमुख उदाहरण हैं- सलुवनकुप्पम् मुरुगन मंदिर, वेप्पाथुर में स्थित वीत्रिरुंधा पेरुमल मंदिर (भगवान विष्णु को समर्पित)।

चित्र: सलुवनकुप्पम् मुरुगन मंदिर के अवशेष

1.5 गुप्तकालीन वास्तुकला (Architecture of Gupta Age)

गुप्त शासन का काल 320 ईसवी से 600 ईसवी तक था। इस काल को कलात्मक उपलब्धि की दृष्टि से स्वर्ण युग (Golden Age) माना जाता है। गुप्त शासक हिंदू मंदिरों के पहले वास्तुकार थे। मंदिर वास्तुकला शैलकृत मंदिरों की परंपरा से आरंभ हुई थी। आगे, यह विकसित होती हुई साधारण शिखर वाले मंदिरों और भव्य नक्काशी से सुसज्जित मंदिरों तक पहुँची।

इस अध्याय के आगामी खंड में गुप्तकाल में विकसित हुई मंदिर वास्तुकला पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है।

1.6 गुप्तकालीन गुहा वास्तुकला (Cave Architecture of Gupta Age)

गुप्त शासकों ने अपने साम्राज्य में अनेक भव्य वास्तुशिल्पों का निर्माण कराया। इन वास्तुशिल्पों के सबसे प्राचीन उदाहरण गुफ़ा मंदिर हैं। ये गुफ़ा मंदिर एक विशिष्ट धार्मिक और दार्शनिक महत्त्व रखते हैं। गुफ़ा मंदिर दरअसल, सपाट चट्टानों को काटकर बनाए गए कमरे हैं। इनका निर्माण धार्मिक समारोहों या पूजा अनुष्ठानों के लिए किया गया था। ये गुहा मंदिर सामान्यत: हिंदू धर्म से संबद्ध हैं। हालाँकि इनमें से कुछ मंदिर बौद्ध धर्म को भी समर्पित हैं।

संरचनात्मक सुदृढ़ता प्राप्त करने के लिए तत्कालीन भारतीय वास्तुकारों ने ठोस चट्टानों का प्रयोग किया। इन मंदिरों ने भारतीय वास्तुकारों को वास्तुशिल्प की स्थिरता संबंधी अनेक अवधारणाओं से परिचित कराया। इसके अलावा, इन ठोस चट्टानों ने स्थापत्य कौशल दिखाने के लिए एक विस्तृत क्षेत्र (Canvas) प्रदान किया।

गुप्तकालीन गुफ़ा मंदिर के उल्लेखनीय उदाहरण मध्य प्रदेश में विदिशा के निकट उदयगिरि में पाए जाते हैं। यहाँ स्थित एक मंदिर में भगवान विष्णु को शूकर के सिर वाले 'वराह अवतार' (Varaha Incarnation) के रूप में दर्शाया गया है।

चित्र: मध्य प्रदेश में स्थित उदयगिरि गुफ़ाएँ

- गुप्त शासकों द्वारा बनवाई गईं गुफ़ाएँ हिंदू और बौद्ध धर्मों से संबंधित स्थापत्य स्वरूप को दर्शाती हैं।
- इस काल में निर्मित की गई कुछ गुफ़ाओं की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं का उल्लेख आगे किया गया है-

अजंता गुफ़ाएँ (Ajanta Caves)

- यहाँ कुल 29 गुफ़ाएँ हैं, जिनमें से 25 का उपयोग 'विहार' के रूप में, जबकि 4 का उपयोग 'चैत्य' के रूप में किया जाता था। इन गुफ़ाओं में भारतीय भित्ति-चित्रकला (Wall Painting) के कुछ आरंभिक और बेहतरीन उदाहरण देखने को मिलते हैं। ये भित्ति-चित्र दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 7वीं शताब्दी ईसवी के मध्य निर्मित किए गए थे। इन चित्रों की विषय-वस्तु मुख्यत: बुद्ध के जीवन से संबंधित है। अजंता की गुफ़ा संख्या 1 में 'पद्मपाणि' और 'वज्रपाणि' नामक बोधिसत्वों का चित्रांकन किया गया है।
- गुफ़ा संख्या 19 का निर्माण पाँचवीं शताब्दी ईसवी में किया गया था। इसका अग्रभाग गुप्त शैली में निर्मित किया गया चैत्य है। इसमें एक स्तंभयुक्त बरामदा और एक बड़ा अर्ध-गोलाकार द्वार बना हुआ है। इसके संपूर्ण अग्रभाग पर सुंदर नक्काशी की गई है, जिसमें बौद्ध धर्म से संबंधित दृश्य उत्कीर्ण किए गए हैं।

चित्र: अजंता गुफ़ाएँ

- अजंता गुफ़ाएँ महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित हैं। ये गुफ़ाएँ 'वघोरा नदी' (Waghora River) के निकट बनी हुई हैं।
- एलोरा गुफ़ाओं की ढलवाँ (Sloping) चट्टान के विपरीत, अजंता गुफ़ाएँ लंबवत् चट्टान (Perpendicular cliff) पर बनी हुई हैं। चूँकि ये गुफ़ाएँ लंबवत् चट्टान पर बनी हैं, इसलिए इनमें चैत्यों की संख्या अधिक नहीं है।
- 'फ्रेस्को' (Fresco) चित्रकला की एक अन्य तकनीक थी। इसका प्रयोग गुप्तकाल में अजंता गुफ़ाओं में चित्र बनाने के लिए किया गया है।
- इसके अंतर्गत सबसे पहले गाय के गोबर और चावल की भूसी का पेस्ट बनाया जाता था। फिर उसे मिट्टी के साथ मिश्रित करके खुरदरी सतह पर फैलाया जाता था। इसके बाद सतह पर चूने के प्लास्टर का लेप किया जाता था। अंतत: चित्रकला पूरी होने तक सतह को नम रखा जाता था।
- अजंता की गुहा चित्रकला में लाल और अन्य रंगों का प्रयोग किया गया है। इन गुहा चित्रों में नीला रंग प्रयुक्त नहीं किया गया है।
- अजंता के चित्रों का मुख्य विषय 'जातक कथाओं' से संबद्ध है। जातक कथाएँ वस्तुत: गौतम बुद्ध के पूर्वजन्म से संबंधित कहानियाँ हैं। गुफ़ा संख्या 26 में सबसे आकर्षक और प्रमुख छवि बुद्ध के महापरिनिर्वाण की है।
- यहाँ पर निर्मित गुफ़ाओं में पाँच गुफ़ाएँ हीनयान बौद्ध धर्म से संबंधित हैं, जबकि शेष गुफ़ाओं में महायान बौद्ध धर्म का चित्रांकन किया गया है।
- अजंता की गुफ़ा संख्या 16 सभी गुफ़ाओं में सबसे सुंदर है। इसमें निर्मित कुछ प्रसिद्ध चित्रों में मरणासन्न राजकुमारी

का चित्र, उड़ती अप्सरा का चित्र, उपदेश देते बुद्ध का चित्र इत्यादि शामिल हैं।

- गुफ़ा के आंतरिक भाग भित्ति चित्रों से ढके हुए हैं। इनमें सुंदर घुमावदार रेखा के साथ भव्य आकृतियाँ उकेरी गई हैं।
- बड़े पत्थर की आकृतियाँ, पत्थर और टेराकोटा पर नक्काशी तथा बड़ी व छोटी काँस्य मूर्तियाँ परिष्कृत गुप्त शैली में बनाई गई हैं।

एलोरा गुफ़ाएँ (Ellora Caves)

- एलोरा में कुल 34 गुफ़ाएँ स्थित हैं। ये गुफ़ाएँ हिंदू/ब्राह्मण (17 गुफ़ाएँ), बौद्ध (12 गुफ़ाएँ) और जैन (5 गुफ़ाएँ) तीनों धर्मों को समर्पित हैं।
- ये गुफ़ाएँ पहाड़ी के ढलान की ओर स्थित हैं।
- इन गुफ़ाओं के निर्माण में राष्ट्रकूट शासकों ने योगदान दिया।
- गुफ़ा संख्या 10 भगवान विश्वकर्मा को समर्पित एक चैत्य है। गुफ़ा 14 में रावण-का-खाई (रावण का निवास स्थान), गुफ़ा संख्या 15 में भगवान विष्णु के दशावतार और गुफ़ा संख्या 16 में कैलाश मंदिर को दर्शाया गया है।
- एलोरा में तीन मंज़िला गुफ़ाएँ भी मौजूद हैं।
- एलोरा में मौजूद दो प्रसिद्ध जैन गुफ़ाएँ 'इंद्र सभा' और 'जगन्नाथ सभा' हैं।

चित्र: एलोरा का कैलाश मंदिर

बाघ गुफ़ाएँ (Bagh Caves)

चित्र: बाघ गुफ़ाएँ

- ये गुफ़ाएँ मध्य प्रदेश में 'बाघ नदी' के तट पर स्थित हैं।
- यहाँ पर 9 गुफ़ाएँ स्थित हैं, जो बौद्ध धर्म से संबंधित हैं। इनका निर्माण छठी शताब्दी ईसवी के आस-पास हुआ था। वास्तुकला की दृष्टि से ये गुफ़ाएँ अजंता की गुफ़ाओं के समान हैं।

जूनागढ़ गुफ़ाएँ (Junagarh Caves)

चित्र: जूनागढ़ गुफ़ाएँ

- ये गुफ़ाएँ गुजरात में स्थित हैं और बौद्ध धर्म से संबंधित हैं।
- इन गुफ़ाओं में 30-50 फीट ऊँचे 'ऊपरकोट' (Uparkot) नामक कृत्रिम मंच/प्लेटफॉर्म बने हैं, जो सीढ़ियों द्वारा एक बड़े कक्ष से जुड़े हुए हैं।

नासिक गुफ़ाएँ (Nashik Caves)

- यहाँ बौद्ध धर्म के हीनयान संप्रदाय से संबंधित 25 गुफ़ाएँ मौजूद हैं।
- इनका निर्माण लगभग प्रथम शताब्दी ईसवी में हुआ था।
- इसे 'पांडव लेनी' (Pandava Leni) भी कहा जाता है।
- यहाँ पर 'सिंहासन' और 'पदचिह्नों' के माध्यम से बुद्ध की आध्यात्मिक उपस्थिति (Spiritual Presence) को दर्शाया गया है।
- इनमें सिर्फ गुफ़ा संख्या 18 एक चैत्य है, जबकि अन्य सभी गुफ़ाएँ विहार हैं।

चित्र: नासिक गुफ़ाएँ

मोंटपेरिर/मंडपेश्वर गुफ़ाएँ (Montperir/Mandapeshwar Caves)

- ये गुफ़ाएँ महाराष्ट्र के बोरीवली में माउंट पॉइंसुर (Mount Poinsur) के निकट स्थित हैं। ये मूल रूप से दहिसर (Dahisar) नदी के तट पर थीं।
- इन शैलकृत गुफ़ाओं (Rockcut caves) का निर्माण आठवीं शताब्दी ईसवी में हुआ था। ये गुफ़ाएँ भगवान शिव को समर्पित हैं।
- इन गुफ़ाओं के सामने एक खुला मैदान है, जिसका उपयोग इस क्षेत्र में स्थित झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले लोग खेल के मैदान और पार्किंग क्षेत्र के रूप में करते हैं।
- कालांतर में पुर्तगालियों ने इसे ईसाई गुफ़ा में परिवर्तित कर दिया था।

चित्र: मंडपेश्वर गुफ़ाएँ

कार्ले गुफ़ाएँ (Karle Caves)

- इनका निर्माण जीवित चट्टानों (Living Rocks) को उत्कीर्णित करके किया गया है।
- इनके स्तंभ अत्यंत मजबूत और भारी हैं, जिनके ऊपर मूर्तियों की नक्काशी की गई है।
- इनके शीर्ष पर लकड़ी के छत्र वाला एक स्तूप आज भी सुरक्षित है।
- भारत के सभी बौद्ध स्मारकों में यह सबसे बड़ा चैत्य-गृह है।
- इस चैत्य-गृह के सामने एक विशाल सिंह स्तंभ स्थित है। यह डिज़ाइन केवल दो गुफ़ाओं - कार्ले और कन्हेरी - में ही प्राप्त होता है।

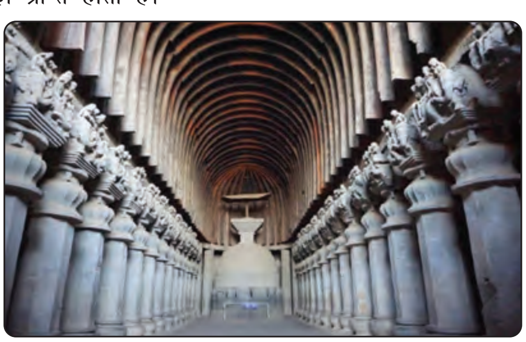

चित्र: कार्ले गुफ़ाएँ

कन्हेरी गुफ़ाएँ (Kanheri Caves)

- यह कार्ले गुफ़ाओं के बाद भारत में दूसरा सबसे बड़ा चैत्य-गृह है।
- एकदम कार्ले गुफ़ाओं के समान ही इसके प्रवेशद्वार पर भी सिंह स्तंभ निर्मित किया गया है।
- इसमें वर्षा जल के संचयन के लिए पोधिस (Podhis) नामक एक जल कुंड (Water Cistern) मौजूद है।
- यहाँ से खड़े बुद्ध और बैठे हुए बुद्ध, दोनों की प्रतिमाएँ प्राप्त होती हैं। इनके किनारे (Flank) पर बोधिसत्व की मूर्तियाँ भी हैं।
- यहाँ से प्राप्त शिलालेखों में प्रसिद्ध सातवाहन शासक 'गौतमीपुत्र शातकर्णी' का नामोल्लेख मिलता है।

चित्र: कन्हेरी गुफ़ाएँ

गुंटापल्ले गुफ़ाएँ (Guntapalle Caves)

- 'गुंटापल्ले गुफ़ाएँ' भारत के पूर्वी तट पर आंध्र प्रदेश में स्थित हैं।
- पश्चिमी भारत की गुफ़ाओं की तुलना में यह गुफ़ा अपेक्षाकृत छोटी है। संभवत: यह उन अत्यंत विशिष्ट स्थलों में से एक है, जहाँ एक ही स्थान पर संरचित स्तूप (Structured stupas), विहार और गुफ़ाओं का निर्माण किया गया है।

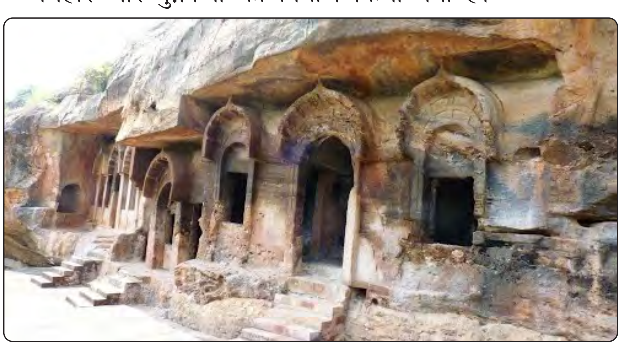

चित्र: गुंटापल्ले गुफ़ाएँ

1.7 गुप्तकालीन मंदिर वास्तुकला (Temple Architecture of Gupta Period)

गुप्तकाल गहन धार्मिक रुचियों का काल था, इसलिए इस दौरान विभिन्न हिंदू देवताओं, जैसे- शिव, विष्णु, सूर्य, कार्तिकेय आदि

को समर्पित कई मंदिरों और धार्मिक वास्तुकलाओं का निर्माण हुआ। दुर्भाग्य से, हूण आक्रमणकारियों ने उनमें से अधिकांश वास्तुशिल्पों को नष्ट कर दिया और कई समय के साथ-साथ नष्ट हो गए।

यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि हिंदू मंदिर किसी सभा-सम्मेलन के आयोजन के लिए नहीं, बल्कि देवताओं के निवास स्थान के रूप में बनाए गए थे। इस विशिष्ट स्थल पर पुजारियों द्वारा देवताओं को भेंट अर्पित की जाती थी। कोई सामान्य व्यक्ति भी किसी देवता के पवित्र अवशेष (Relic) या मूर्ति के समक्ष प्रार्थना कर सकता था तथा उन्हें पुष्प, खाद्य पदार्थ इत्यादि अर्पित कर सकता था। पूजा अनुष्ठान की प्रक्रिया के रूप में श्रद्धालु मंदिर के चारों ओर परिक्रमा करते थे।

गुप्तकालीन मंदिर वास्तुकला की विशेषताएँ (Features of Temple Architecture of Gupta Period)

- गुप्त स्मारकों का निर्माण पौराणिक धार्मिक अवधारणाओं के तहत किया गया था।
- गुप्त मंदिरों में संतुलन और सुंदरता, दोनों का समन्वय मिलता है।
- ईंट और पत्थर, दोनों प्रकार के मंदिरों में बाह्य अलंकरण (External decoration) को अत्यंत महत्त्व दिया गया है।
- गुप्त शैली के मंदिरों पर कुषाण, मथुरा और गांधार शैलियों का प्रभाव दिखाई देता है। इन शैलियों के प्रभाव के कारण गुप्त मंदिरों में टी-आकार (T-Shaped) के द्वार, सुसज्जित चौखटें, भव्य नक्काशी युक्त मूर्तिकला, फूल-मालाओं का रूपांकन इत्यादि विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।
- गुप्त वास्तुकला में मंदिरों के वर्गाकार स्वरूप को सर्वोत्तम माना जाता था और मंदिरों को बेहद कुशलतापूर्वक डिज़ाइन किया गया था।
- इस दौरान मंदिरों के निर्माण के लिए मुख्यत: बलुआ पत्थर, ग्रेनाइट और ईंटों का उपयोग किया जाता था।
- गुप्तकाल में निर्मित हुए कुछ उल्लेखनीय मंदिरों के उदाहरण निम्नानुसार हैं-

देवगढ़ का दशावतार मंदिर (Dashavatara Temple at Deogarh)

- भव्य मूर्तिकला की अनेक प्रतिमाओं की उपस्थिति के कारण इस मंदिर को सर्वोत्तम मंदिरों में से एक माना जाता है।
- देवगढ़ के दशावतार मंदिर के चबूतरे के चारों ओर रामायण महाकाव्य के दृश्यों को दर्शाने वाली नक्काशी की गई थी।
- चबूतरे/जगती (Jagati) के केंद्र में मुख्य मंदिर बना होता था और इसमें खिड़कियाँ नहीं थीं। इस मुख्य मंदिर तक पहुँचने के लिए चारों ओर सीढ़ियाँ बनी होती थीं। यहाँ पर मुख्य मंदिर के चारों और चार सहायक मंदिरों की स्थापना भी की गई है। मंदिर निर्माण की इस शैली को 'पंचायतन शैली' के नाम से जाना जाता है।

चित्र: देवगढ़ का दशावतार मंदिर

- इस मंदिर समूह के प्रत्येक कोने पर चार छोटे मंदिर बने हुए हैं।
- दशावतार मंदिर के पवित्र वर्गाकार मंदिर समूह का द्वार स्थापत्य का एक अच्छा उदाहरण है। इसमें विष्णु, ब्रह्मा, इंद्र, गंगा और यमुना के साथ-साथ परिचारकों (Attendant) व मिथुन युगल (Mithuna Couple) की मूर्तियाँ भी लगी हुई हैं।
- इस मंदिर में प्राचीन भारत के सबसे प्रसिद्ध मूर्तिकलात्मक स्वरूपों में से एक, विष्णु अनंतशायन (Vishnu Anantasayana) का रूपांकन भी किया गया है।
- इस दृश्य में कई देवताओं को चित्रित किया गया है, लेकिन सोते हुए विष्णु का रूपांकन प्रमुख आकर्षण का केंद्र है, जो कई सिरों (Heads) वाले नाग 'अनंत' पर आराम कर रहे हैं। यह नाग पानी पर तैर रहा है और भगवान विष्णु की नाभि से एक कमल का पत्ता निकल रहा है। इस कमल के पत्ते पर सृष्टि के भगवान ब्रह्मा विराजमान हैं।
- पत्थरों से बने मंदिरों के अलावा, गुप्त काल में ईंटों से भी मंदिरों का निर्माण किया गया था। ईंटों से बने मंदिरों में उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले में स्थित भीतरगाँव का मंदिर सबसे प्रसिद्ध है।

भीतरगाँव मंदिर (Bhitargaon Temple)

उत्तर प्रदेश का भीतरगाँव मंदिर एक ऐसा गुप्तकालीन मंदिर है, जो अभी भी लगभग अपने वास्तविक स्वरूप में मौजूद है। यह मंदिर पूर्णत: ईंटों से निर्मित है और आरंभिक हिंदू मंदिर स्थापत्य का एक दुर्लभ उदाहरण है। इसका निर्माण पाँचवीं शताब्दी ईसवी के अंत में हुआ था। यद्यपि इसका ऊपरी भाग क्षतिग्रस्त हो गया है।

इस मंदिर के ऊपरी हिस्से में चारों ओर वक्राकार शिखर बना हुआ है। इससे नीचे कुछ अस्पष्ट आयताकार स्तंभ (Shallow Pilasters) बने हुए हैं। मंदिर में अनेक 'गवाक्ष' (Windows) बने हुए हैं, जिनकी संख्या मंदिर की ऊँचाई बढ़ने के साथ-साथ घटती जाती है।

चित्र: भीतरगाँव मंदिर

मंदिर के सुसज्जित भाग में पहले कुछ मृण्मूर्तियाँ (Terracotta) भी लगी हुई थीं। इनमें से कुछ मृण्मूर्तियाँ तो आज भी मौजूद हैं, लेकिन अन्य स्थलों के उदाहरण यह दर्शाते हैं कि उनमें कभी पौराणिक कथाओं के जीवंत दृश्य (Lively scenes) उकेरे गए होंगे, विशेष रूप से, नदी देवी की आकृतियाँ।

1.8 गुप्तकाल में मंदिर वास्तुकला का उद्-विकास (Evolution of Temple Architecture in Gupta Period)

प्रथम चरण (Stage - 1)

- आरंभिक मंदिरों की छत सपाट होती थी तथा उथले स्तंभों वाले मंडप (Shallow Pillared Porch) से युक्त चौकोर इमारत बनाई जाती थी।
- किसी मंदिर का केंद्रीय भाग 'गर्भगृह' होता था। इसमें एक प्रवेशद्वार होता था। इसी चरण में पहली बार मंडप का निर्माण भी किया गया। उदाहरण के लिए, तिगवा का कंकाली देवी मंदिर तथा एरण के विष्णु और वराह मंदिर।

चित्र: एरण स्थित वराह मंदिर

द्वितीय चरण (Stage - 2)

- दूसरे चरण में, सपाट छत और चौकोर मंदिरों का निर्माण जारी रहा। इस चरण में स्तंभों का निर्माण भी होता रहा, हाँलाकि इस चरण में स्तंभ उथले (Shallow) नहीं रह गए थे।
- गर्भगृह के चारों ओर एक प्रदक्षिणा पथ बनाया जाने लगा और कुछ मंदिर दोमंज़िला भी बनने लगे।
- मंदिर अब एक ऊँचे चबूतरे पर बनने लगे थे। उदाहरण के लिए, भूमरा (मध्य प्रदेश) में स्थित शिव मंदिर।

चित्र: ऐहोल स्थित लड़खन मंदिर

तृतीय चरण (Stage - 3)

- मंदिर का निचला हिस्सा वर्गाकार होता था, जबकि मंदिर का ऊपरी हिस्सा शिखरनुमा बनाया जाने लगा।
- मंदिर निर्माण की शैली में 'पंचायतन शैली' का प्रादुर्भाव हुआ। इसके तहत मुख्य मंदिर के चारों तरफ चार सहायक मंदिर निर्मित किए जाने लगे।
- उदाहरण के लिए, झाँसी जिले के देवगढ़ में स्थित दशावतार मंदिर (पत्थर से निर्मित) और कानपुर जिले में स्थित भीतरगाँव मंदिर (ईंटों से निर्मित)।
- चबूतरे और शिखर की ऊँचाई बढ़ने के कारण मंदिर की ऊँचाई में भी वृद्धि हुई।
- मंदिरों की दो व तीन मंज़िलों और शिखर के स्वरूप के आधार पर मंदिर निर्माण की दो प्रमुख शैलियों का विकास हुआ। ये शैलियाँ उत्तर और दक्षिण भारत में क्रमशः 'नागर शैली' और 'द्रविड़ शैली' के नाम से जानी गईं।

चित्र: देवगढ़ का दशावतार मंदिर

चतुर्थ चरण (Stage - 4)

- अब आयताकार मंदिरों का निर्माण होने लगा। इसका पिछला हिस्सा अर्ध-गोलाकार (Apsidal) और छत वाला ऊपरी हिस्सा मेहराबदार (Barrel Vaulted Roof) बनाया जाने लगा।
- उदाहरण के लिए, शोलापुर स्थित तेर मंदिर।

चित्र: शोलापुर स्थित तेर मंदिर

पंचम चरण (Stage - 5)

- इस दौरान उथले आयताकार किनारों (Shallow Rectangular Projection) से युक्त वृत्ताकार मंदिरों का निर्माण होने लगा। उदाहरण के लिए, बिहार के राजगीर में स्थित मनियार मठ मंदिर।
- चौथा और पाँचवाँ चरण आरंभिक तीन चरणों का अनुकूलन प्रतीत होता है। बाद के समय में मंदिरों के विकास क्रम पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ा।

चित्र: राजगीर स्थित मनियार मठ मंदिर

1.9 मंदिर स्थापत्य की विभिन्न शैलियाँ (Different Styles of Temple Architecture)

नागर शैली (Nagara Style)

- मंदिर स्थापत्य की उद्-विकास यात्रा के तीसरे चरण में 'नागर शैली' का विकास आरंभ हुआ।
- नागर शैली के मंदिरों में जलाशयों (Tanks) की अनुपस्थिति देखी गई।
- मंदिर की दीवारों को तीन ऊर्ध्वाधर तलों या 'रथों' में विभाजित किया गया था।

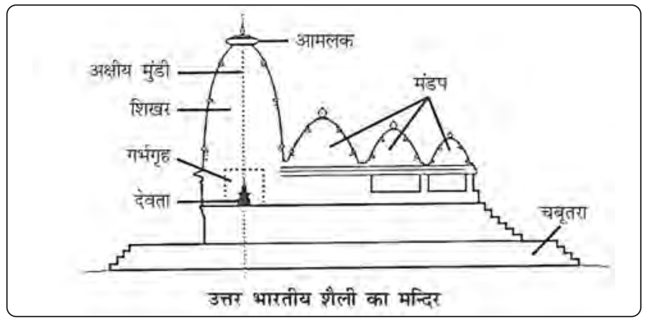

चित्र: नागर शैली का मंदिर

- आरंभ में, मूर्तियों का निर्माण तीन रथों (त्रिरथों) के रूप में किया गया। बाद में पंचरथ, सप्तरथ और यहाँ तक कि नवरथ का भी उदय हुआ।
- इसमें क्रमशः अंदर की ओर मुड़ता हुआ वक्राकार शिखर बना होता है। यह अपने शीर्ष पर एक गोलाकार तश्तरीनुमा संरचना से ढाका होता है, जिसे 'आमलक' कहा जाता है। यह मंदिर को ऊँचाई प्रदान करता है।
- यह मंदिर एक चबूतरे पर बना होता है।
- नागर शैली के मंदिर मुख्यतः उत्तर और मध्य भारत में पाए जाते हैं। यह शैली प्रायद्वीपीय भारत में प्रचलित नहीं थी।
- नागर शैली की तीन उप-शैलियाँ भी विकसित हुई, ये थीं- खजुराहो शैली, सोलंकी शैली और ओडिशा शैली।

खजुराहो शैली (Khajuraho Style)

- इस शैली का विकास चंदेल शासकों द्वारा 10वीं-11वीं शताब्दी में किया गया था। इसके अंतर्गत मंदिर के आंतरिक और बाहरी, दोनों हिस्सों को बारीक नक्काशी द्वारा भव्य रूप से सजाया जाता है। इस शैली के मंदिरों पर कामुक विषयों (Erotic themes) पर आधारित मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं।
- इन मंदिरों में चारदीवारी का अभाव होता है। इसमें सहायक मंदिरों पर भी शिखर देखे जाते हैं और इस शैली के मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बने होते हैं। इस शैली के मंदिरों में तीन प्रमुख तत्त्व दिखाई देते हैं, ये हैं- गर्भगृह, सभागार कक्ष और स्तंभयुक्त बरामदा।

चित्र: विश्वनाथ मंदिर, खजुराहो

सोलंकी शैली (Solanki Style)

- यह शैली सोलंकी शासकों द्वारा गुजरात में विकसित की गई थी। इसके अंतर्गत मंदिर का निर्माण विशाल आयताकार बावड़ी (Stepped Tank) की सीढ़ियों पर किया गया था। केंद्रीय मंदिर की दीवार नक्काशी से रहित है और मंदिर का मुख पूर्व की ओर है। इसलिए प्रतिवर्ष विषुव (equinox) के समय सूर्य सीधे केंद्रीय गर्भगृह पर चमकता है।
- मंदिर का केंद्रीय गर्भगृह उत्तर, दक्षिण और पश्चिम की ओर से पूर्ण-कलश स्तंभों और गहरे बरामदे वाली बालकनियों से ढका हुआ है। मंदिर का प्रवेशद्वार पूर्व दिशा में है।
- गुजरात के पश्चिमी तट पर सौराष्ट्र में वेरावल के पास प्रभास पाटन में स्थित सोमनाथ मंदिर, शिव के बारह ज्योतिर्लिंग मंदिरों में से पहला माना जाता है। कई आक्रमणकारियों द्वारा बार-बार नष्ट किए जाने के बाद अतीत में कई बार इस मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया। वर्तमान मंदिर का पुनर्निर्माण हिंदू मंदिर वास्तुकला की सोलंकी शैली (चालुक्य शैली) में किया गया। 11 मई, 1951 को सोमनाथ मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा (आज के मंदिर की स्थापना) भारत गणराज्य के पहले राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद जी के द्वारा की गई थी। मध्यकालीन यात्री अल-बरूनी ने भी सोमनाथ मंदिर का वर्णन किया है।

चित्र: मोढेरा का सूर्य मंदिर

ओडिशा शैली (Odisha Style)

- इस शैली से संबंधित अधिकांश मंदिर मुख्यत: प्राचीन पुरी और कोणार्क में स्थित हैं।
- इस शैली के मंदिरों में शिखर को 'देउल' कहा जाता है। यह लगभग शीर्ष तक लंबवत् होता है, लेकिन उसके ऊपर यह अचानक अंदर की ओर मुड़ता है।
- देउल के पहले, हमेशा की तरह, मंडपों का निर्माण होता था, जिन्हें ओडिशा में 'जगमोहन' कहा जाता है।
- इस शैली का मुख्य मंदिर वर्गाकार होता है।
- मंदिरों के बाहरी हिस्से पर भव्य नक्काशी की गई है, जबकि उनके आतंरिक हिस्से पर नक्काशी देखने को नहीं मिलती है।
- ओडिशा शैली के मंदिरों को आमतौर पर परकोटे (चारदीवारी) से घेरा गया है।
- उदाहरण: कोणार्क का सूर्य मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, लिंगराज मंदिर इत्यादि।

चित्र: कोणार्क का सूर्य मंदिर

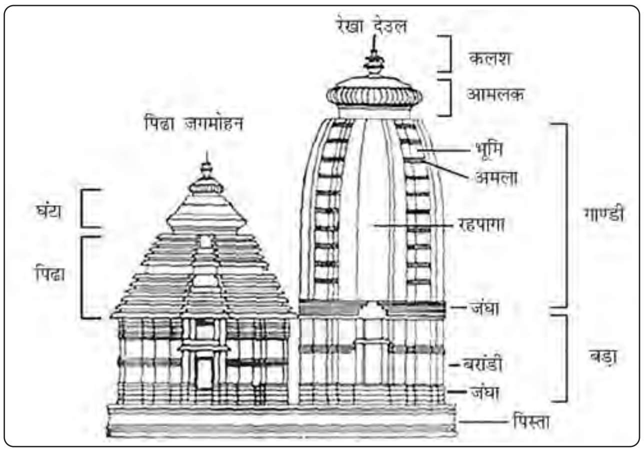

चित्र: जगन्नाथ मंदिर

शिखर की आकृति के आधार पर नागर शैली के मंदिरों के तीन उप-प्रकार (Three Subtypes of Nagara Temple Depending upon the Shape of Shikhara)

रेखा-प्रसाद/लैटिन (Rekha Prasad/Latina)

चित्र: रेखा-प्रसाद/लैटिन शिखर

- ये मंदिर आधार पर वर्गाकार होते हैं तथा शीर्ष पर इनकी दीवारें अंदर की ओर मुड़ी हुई होती हैं।
- लैटिन प्रकार का उपयोग मुख्य रूप से गर्भगृह के संदर्भ में किया जाता है।
- इसके शीर्ष को 'लैटिन' या 'रेखा-प्रासाद' प्रकार का शिखर कहा जाता है।

फमसाना (Phamsana)

- फमसाना इमारतों का आधार लैटिन इमारतों की तुलना में अधिक चौड़ा और ऊँचाई अपेक्षाकृत कम होती है।
- इनकी छतें कई परतों से मिलकर बनी होती हैं, जो धीरे-धीरे इमारत के केंद्र बिंदु तक ऊपर की ओर बढ़ती हैं। जबकि लैटिन इमारतों के शिखर केंद्र की ओर वक्राकार रूप में मुड़े हुए होते हैं।
- इनका शिखर केंद्र की ओर झुकता हुआ वक्राकार नहीं होता है, बल्कि इनका शिखर क्रमशः परतों में छोटा होकर ऊपर बढ़ता है और एक बिंदु पर संकेंद्रित हो जाता है।
- उत्तर भारत में निर्मित होने वाले अधिकांश मंदिरों में मंडप के लिए फमसाना और गर्भगृह के लिए लैटिन शिखरों का उपयोग किया जाता था।

चित्र: फमसाना शिखर

वल्लभी (Valabhi)

- इस प्रकार के मंदिरों का आधार आयताकार होता है, जबकि छतें गुंबदाकार कक्ष (Vaulted chamber) के रूप में उठी होती हैं।
- इन इमारतों की छतों को सामान्यतः अर्ध-गोलाकार छतें भी कहा जाता है।
- उदाहरण के लिए, जोगेश्वर स्थित नंदी देवी या नव दुर्गा मंदिर।

चित्र: वल्लभी शिखर

विविध

- चौसठ योगिनी मंदिर मुरैना जिले के मितौली गाँव में है। 1323 ईसवी के एक शिलालेख के अनुसार, मंदिर का निर्माण कच्छपघाट वंश के शासक राजा देवपाल (1055 - 1075 ईसवी) द्वारा किया गया था। यह मंदिर 65 कक्षों वाली एक गोलाकार दीवार से बना है, जो स्पष्ट रूप से 64 योगिनियों और देवी के लिए है, और एक गोलाकार आँगन के केंद्र में एक खुला मंडप है, जो भगवान शिव से संबंधित है। यह वृत्ताकार मंदिर भारत के बहुत कम ऐसे मंदिरों में से एक है। इसके डिज़ाइन पर एक लोकप्रिय धारणा बनी है कि यह भारतीय संसद भवन के लिए प्रेरणा-स्रोत रहा था।
- सूर्य देव का एक प्राचीन मंदिर आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम शहर के अरासवल्ली में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण उड़ीसा की मंदिर वास्तुकला शैली में किया गया था।

दक्षिण भारत में मंदिर स्थापत्य (Temple Architecture in South India)

पल्लव वास्तुकला (Pallava Architecture)

- यह शैली पल्लव काल के दौरान विकसित हुई थी और इसे चार चरणों में विभाजित किया जा सकता है।
- पहले चरण में, महेंद्र समूह के शैलकृत स्थापत्य (Rock-Cut Architecture) निर्मित किए गए थे और इनके लिए 'मंडप' शब्द का प्रयोग किया गया था।
- दूसरे चरण में, निर्मित मंदिरों को नरसिंह समूह के मंदिर कहा गया। ये मंदिर भी चट्टानों को काटकर बनाए गए थे और इनमें नक्काशी की गई थी। अब इन्हें मंडप के स्थान पर 'रथ' कहा गया।

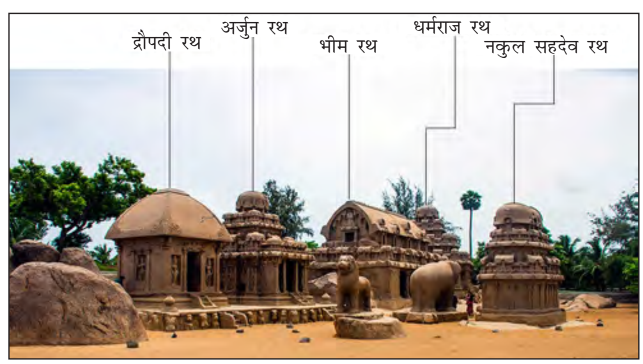

चित्र: महाबलीपुरम् के रथ मंदिर

- तीसरे चरण के मंदिर राजसिंह शैली के मंदिर कहलाए। इस दौर में वास्तविक संरचनात्मक मंदिरों का विकास हुआ। उदाहरण के लिए, महाबलीपुरम् में तटवर्ती मंदिर, कांचीपुरम् का कैलाशनाथ मंदिर इत्यादि।
- चौथे चरण में नंदीवर्मन शैली के मंदिरों का विकास हुआ। छोटे मंदिरों और द्रविड़ शैली का विकास चौथे चरण से जारी रहा।

चित्र: महाबलीपुरम् का तट मंदिर

द्रविड़ शैली (Dravidian Style)

- मंदिर निर्माण की यह शैली 7वीं से 18वीं सदी तक दक्षिण भारत, विशेषकर तमिलनाडु में, हिंदू मंदिरों के लिए प्रयोग में लाई गई। इस शैली की मुख्य विशेषता मंदिरों में निर्मित किए जाने वाले 'पिरामिडनुमा शिखर' (Pyramidal Tower) हैं।
- नागर शैली के मंदिरों के विपरीत, द्रविड़ मंदिरों को एक परिसर में बनाया जाता है तथा उन्हें एक दीवार से घेरा जाता है।
- सामने की दीवार के मध्य में एक प्रवेशद्वार होता है, जिसे गोपुरा/गोपुरम् कहा जाता है।
- इसमें एक वर्गाकार कक्ष वाला गर्भगृह होता है, जिसके शीर्ष पर बनी संरचना को 'विमान' (Vimana) कहा जाता है।
- विमान एक सीढ़ीदार पिरामिड (Stepped pyramid) की तरह है, जो उत्तर भारत के मंदिरों के वक्राकार शिखर के बजाय ज्यामितीय रूप से ऊपर उठता है।
- द्रविड़ शैली के मंदिर में एक स्तंभयुक्त विशाल कक्ष होता है, जिसे 'मंडप' (Mandapa) कहते हैं। यह केंद्रीय गर्भगृह के प्रवेशद्वार से पहले बना होता है।
- ये मंदिर बहुमंज़िला होते हैं। इनकी प्रत्येक मंज़िल पर लघु मंदिरों का निर्माण किया गया है और इन्हें चित्रांकित किया गया है।
- शिखर के शीर्ष पर एक गुंबदाकार संरचना निर्मित की गई है और एक मुकुट रूपी कलश (Crowning pot) स्थापित किया गया है।
- मंदिर के परिसर में एक बड़े जलाशय की उपस्थिति दक्षिण भारतीय मंदिरों की सामान्य विशेषता है।
- उत्तर भारतीय मंदिरों में एकसाथ कई शिखरों का समूह निर्मित किया जाता था, लेकिन दक्षिण भारत के द्रविड़ मंदिरों में यह देखने को नहीं मिलता है।
- दक्षिण भारत के कुछ पवित्र मंदिरों में गर्भगृह का शिखर सबसे छोटा है। ऐसा इसलिए है कि यह सामान्यत: मंदिर का सबसे पुराना हिस्सा है।

चित्र: द्रविड़ शैली की मंदिर वास्तुकला

- समय के साथ-साथ जब जनसंख्या और मंदिर शहर (Temple Town) का आकार बढ़ गया, तो मंदिर और उससे संबंधित संरचनाओं को घेरने के लिए एक नई सीमा दीवार (Boundary Wall) बनाना आवश्यक हो गया होगा।
- इसका एक उदाहरण तिरुचिरापल्ली में स्थित श्रीरंगम् मंदिर है, जिसमें सात 'संकेंद्रित आयताकार दीवारें' (Concentric Rectangular Walls) बनी हुई हैं और उनमें से प्रत्येक में गोपुरम् बना हुआ है।
- इनमें से सबसे बाहरी हिस्सा सबसे नया है, जबकि इनके ठीक बीच में स्थित गर्भगृह का शिखर सबसे प्राचीन है।
- नागर वास्तुकला की भाँति द्रविड़ शैली के मंदिरों में भी उप-विभाजन होते हैं। ये मंदिर मूल रूप से निम्नलिखित पाँच अलग-अलग आकार के होते हैं-
    - कुटिना या कटुरासर (Kutina or Caturasara) - वर्ग
    - शाला या आयताम्र (Shala or Ayatasra) - आयताकार
    - गज-पृष्ठ या वृत्तायत (Gaja-Prishtha or Vrittayata) - अंडाकार
    - वृत्त (Vritta) - गोलाकार
    - अष्टस्र (Ashtasra) - अष्टकोणीय
- चोलों के तहत, वास्तुकला की द्रविड़ शैली ने पूर्णता प्राप्त की। इस दौरान चोल शासक राजेंद्र ने गंगईकोंडचोलपुरम् में भगवान शिव को समर्पित भव्य मंदिर का निर्माण कराया। इसके अलावा, अन्य चोल शासक राजराज ने चिदंबरम और तंजावुर में भी अद्‌भुत मंदिरों का निर्माण कराया।
- चोल मंदिरों को शासकों द्वारा भूमि प्रदान की जाती थी। मंदिरों ने बस्तियों और शिल्प उत्पादन के केंद्र के रूप में कार्य किया। वे पूजा स्थल के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन (Socio-Cultural Life) के केंद्र भी थे। इस प्रकार, ये मंदिर दोहरे उद्देश्य की पूर्ति करते थे।

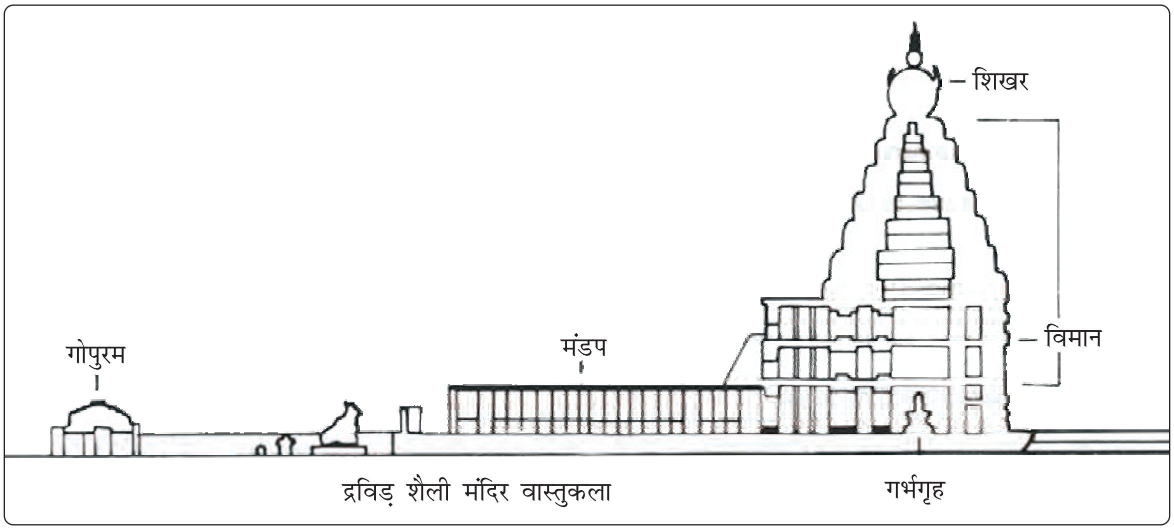

चित्र: द्रविड़ शैली की मंदिर वास्तुकला

वेसर शैली (Vesara Style)

मंदिर निर्माण की यह वास्तुकला द्रविड़ और नागर, दोनों शैलियों का मिश्रण है। इसे 'चालुक्य शैली' भी कहा जाता है। इसमें अन्य विशेषताओं के अलावा, द्रविड़ प्रकार की विमान संरचना और नागर प्रकार की दीवारें शामिल हैं।

नागर शैली का प्रभाव: मंदिर की योजना, सहायक मंदिर, पंचायतन शैली आदि नागर शैली के प्रभाव को इंगित करते हैं। गर्भगृह को मंडप से जोड़ने वाली संरचना उड़ीसा के मंदिरों से मिलती-जुलती है।

द्रविड़ शैली का प्रभाव: द्रविड़ प्रभाव मुख्य रूप से चालुक्य मंदिरों के विमानों में दिखाई देता है।

नागर और द्रविड़ शैलियों का संयोजन: 'वेसर शैली के मंदिरों का शिखर', नागर शैली के मंदिरों के शिखर और द्रविड़ शैली की विमान संरचना के संयोजन को दर्शाता है। चालुक्य मंदिरों में नक्काशीदार लघु स्तंभ तथा दीवारों पर किया गया अलंकरण, नागर और द्रविड़ शैलियों के मिश्रण का सूचक है।

नागर और द्रविड़ शैलियों से भिन्नता: बेसर शैली के मंदिरों में दो या दो से अधिक प्रवेशद्वार हैं, जबकि नागर मंदिरों में एक छोटा बंद मंडप होता है और द्रविड़ मंदिरों में एक बड़ा, खुला और बंद मंडप होता है।

कुछ प्रमुख विशेषताएँ: चालुक्य (बेसर शैली) मंदिरों की दो प्रमुख विशेषताएँ मंडप और स्तंभ हैं-

- **मंडप:** मंडप में दो प्रकार की छत हो सकती हैं - प्रथम, गुंबदाकार छत (चार स्तंभों पर खड़ी गुंबद जैसी ये छतें अत्यंत आकर्षक होती हैं) या द्वितीय, चौकोर छत (ये छतें पौराणिक चित्रों से अलंकृत होती हैं।)
- **स्तंभ:** चालुक्य शैली के मंदिरों में लघु सजावटी स्तंभ निर्मित किए गए हैं, जिनका अपना विशिष्ट कलात्मक मूल्य है।

चित्र: बेसर शैली की मंदिर स्थापत्य कला

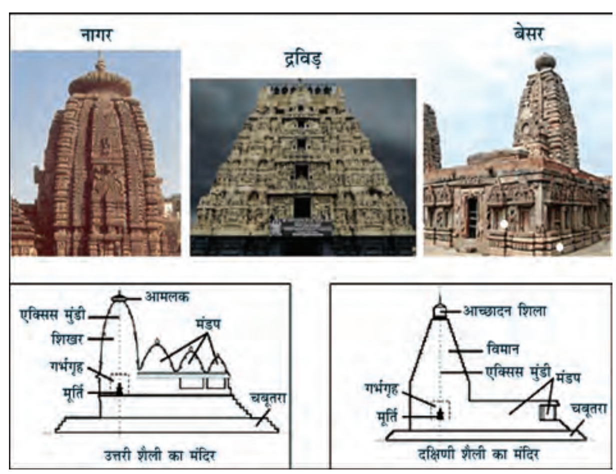

चित्र: नागर, द्रविड़ व बेसर शैली के मंदिर

द्रविड़ शैली	नागर शैली
दक्षिण भारतीय क्षेत्र	**उत्तर भारतीय क्षेत्र**
पिरामिडनुमा बहुमंज़िला शिखर (विमान), जिसका आकार ऊपर की ओर क्रमशः घटता जाता है।	गर्भगृह के ऊपर निर्मित वक्राकार शिखर, जिसका वक्र क्रमशः केंद्र की ओर मुड़ता है।
गोपुरम् उपस्थित	गोपुरम् अनुपस्थित

द्रविड़ शैली	नागर शैली
दक्षिण भारतीय क्षेत्र	**उत्तर भारतीय क्षेत्र**
विभिन्न राजवंशों द्वारा विकसित किया गया।	क्षेत्रीय रूप से विकसित हुआ, प्रत्येक क्षेत्र अपने विशेष गुणों को प्रदर्शित करता है।
मंदिर का परिसर एक दीवार से घिरा होता है।	मंदिर को घेरने वाली दीवार अनुपस्थित होती है।
मंदिर के सामने एक छोटा जलाशय मौजूद होता है, जिसमें से पवित्र उद्देश्यों के लिए पानी निकाला जाता है।	जलाशय मौजूद हो भी सकता है और नहीं भी।

वास्तुकला की विजयनगर शैली
(Vijayanagara Style of Architecture)

- विजयनगर साम्राज्य ने 1336 ईसवी से 1646 ईसवी तक दक्षिण भारत में शासन किया। अपनी समाप्ति के साथ ही यह साम्राज्य वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला की एक स्थायी विरासत छोड़ गया। इस साम्राज्य की स्थापना हरिहर प्रथम ने की थी।
- विजयनगर के शासक कला और वास्तुकला के महान संरक्षक थे। उनकी राजधानी हम्पी थी। इस काल में गोपुरम् का आकार बड़ा होने लगा था और ये सभी दिशाओं में बनाए जाने लगे थे। इस समय मंदिर परिसर को घेरने वाली दीवार की ऊँचाई में भी वृद्धि हुई।
- इस दौरान हिंदू मंदिरों की निर्माण-कला में व्यापक नवाचार हुए और दक्षिण भारत में मंदिर निर्माण की अनेक परंपराएँ और शैलियाँ विजयनगर शैली में एक साथ प्रकट हुईं। इसका सबसे अच्छा उदाहरण विजयनगर साम्राज्य की राजधानी हम्पी में देखने को मिलता है।

विजयनगर वास्तुकला की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

चित्रः विट्ठल मंदिर, हम्पी

- विजयनगर वास्तुकला चालुक्य, होयसल, पांड्य और चोल शैलियों का एक जीवत मिश्रण है। ये शैलियाँ पिछली शताब्दियों में पूर्ववर्ती साम्राज्यों द्वारा विकसित की गई थीं।
- बादामी के चालुक्यों की भाँति विजयनगर शासकों ने भी इन इमारतों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए निर्माण सामग्री के रूप में स्थानीय स्तर पर मौजूद कठोर ग्रेनाइट चट्टानों को प्राथमिकता दी।
- हालाँकि, नक्काशी करने और मूर्तियों के निर्माण के लिए सेलखड़ी पत्थर (Soap Stone) का उपयोग भी किया जाता था। यह पत्थर अपेक्षाकृत मुलायम और सुगमता से तराशे जाने योग्य होता था।
- विजयनगर मंदिरों की प्रमुख विशेषताएँ हैं- अलंकृत स्तंभों वाले विशाल कक्ष (कल्याण मंडप), ऊँचे रायगोपुरम और मंदिर के प्रवेशद्वार पर स्थित स्मारकीय शिखर, जो मानवरूपी देवी-देवताओं की आकृतियों से सुसज्जित हैं।
- विजयनगर मंदिर अपने नक्काशीदार स्तंभों के लिए भी जाने जाते हैं, जो पौराणिक हिंदू कथानकों से संबंधित घोड़ों व अन्य आकृतियों को चित्रित करते हैं। नीचे दर्शाया गया चित्र हम्पी में स्थित चंदिकेश्वर मंदिर के स्तंभों का है।

चित्रः हम्पी में स्थित चंदिकेश्वर मंदिर के स्तंभ

- विजयनगर काल की वास्तुकला को मोटे तौर पर धार्मिक, दरबारी और नागरिक (Civic) वास्तुकला में वर्गीकृत किया जा सकता है। वर्तमान में, विजयनगर साम्राज्य की राजधानी हम्पी और उसके आस-पास के स्मारकों को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल कर लिया गया है।
- विजयनगर शैली के कुछ प्रसिद्ध मंदिरों में हम्पी में स्थित विरुपाक्ष मंदिर और देवराय-प्रथम द्वारा निर्मित हज़ारा राम मंदिर शामिल हैं।

विरूपाक्ष मंदिर, हम्पी (Virupaksha Temple] Hampi)**:**

- यह मंदिर विशेष रूप से, विजयनगर शैली में निर्मित लंबे और अलंकृत रायगोपुरम का प्रसिद्ध उदाहरण है।

चित्रः विरूपाक्ष मंदिर

हज़ारा राम मंदिर (Hazara Ram Temple):

- हम्पी में स्थित हज़ारा राम मंदिर हम्पी के महत्त्वपूर्ण मंदिरों में से एक है। यह मंदिर छोटा, लेकिन अत्यंत भव्य है और शाही क्षेत्र के केंद्र में स्थित है। यह मंदिर भगवान राम को समर्पित है।

चित्र: हज़ारा राम मंदिर

- इस मंदिर के सुंदर आधार अवशेषों पर रामायण महाकाव्य की कहानी को बेहतर ढंग से दर्शाया गया है।
- इसकी सबसे उद्भुत विशेषता चार शानदार पॉलिशदार काले पाषाण स्तंभ हैं, जो 'मंडप' को सहारा देते हैं।
- इन पर सुंदर मूर्तियाँ उत्कीर्णित की गई हैं। स्तंभों पर भगवान विष्णु, लक्ष्मीनारायण, कृष्ण, ब्रह्मा और अन्य का चित्रांकन किया गया है।

महल और दरबारी वास्तुकला (Palaces and Courtly Architecture)

- विजयनगर काल में निर्मित राजसी महल संबंधी कोई संरचना वर्तमान में शेष नहीं है। उनके बारे में हमें जो कुछ भी ज्ञात है, वह हम्पी की पुरातात्विक खुदाई से प्राप्त अवशेषों पर आधारित है। अधिकांश महल पूर्व या उत्तर दिशा की ओर बने थे। इन महलों को ऊँची और शंक्वाकार पत्थर व मिट्टी की दीवारों से घेरा गया था।
- इन्हें ग्रेनाइट के ऊँचे चबूतरों पर बनाया जाता था। इन महलों में साँचों के माध्यम से विभिन्न परतों में सुंदर नक्काशी की जाती थी।
- ये महल आमतौर पर कई स्तरों (Levels) तक विस्तृत होते थे। उनके दोनों ओर छज्जेदार ऊँची सीढ़ियाँ होती थीं, जिन पर याली (Yali), अर्थात् घोड़े और हाथियों की आकृतियों की नक्काशी की गई थी।
- स्तंभ और शहतीर (Beam) लकड़ी के बने होते थे और छतें ईंट व चूने के कंक्रीट की होती थीं।
- विजयनगर की दरबारी वास्तुकला सामान्यत: पत्थर के मलबे के साथ मिश्रित गारे (Mortar) से बनी होती थी।
- इसमें किया गया मेहराबों व गुंबदों का प्रयोग, इस पर इस्लामी प्रभाव को दर्शाता है। विजयनगर शैली एक धर्मनिरपेक्ष शैली का उदहारण है।

नागरिक वास्तुकला (Civic Architecture)

- अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाली विजयनगर वास्तुकला अपनी जलीय/सिंचाई संरचनाओं में भी अनोखी है। बुक्का द्वारा निर्मित एक विशाल नहर/जलमार्ग (Aqueduct) के अवशेष ऐसी परियोजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें प्रेरित करते हैं।
- हमें यह ज्ञात नहीं है कि जमीन के स्तर से कई मीटर ऊपर, इस नहर/जलमार्ग (Aqueduct) के शीर्ष तक पानी कैसे पहुँचाया जाता था। संभवत: इसके संचालन के दिनों में मानवों द्वारा नीचे बहती नदी से पानी लेकर इसमें भरा जाता था।
- नहर के शीर्ष भाग को सहारा देने के लिए अनेक स्तंभ निर्मित किए गए थे।
- स्तंभों और शीर्ष संरचना के निर्माण के लिए ग्रेनाइट के विशाल आयताकार खंडों का उपयोग किया गया था।
- निचले स्तरों पर बड़े खंडों का उपयोग किया गया। ऊपर की ओर जाने पर इन ब्लॉकों का आकार क्रमश: घटता जाता है। यह वास्तुकलात्मक कौशल को दर्शाता है, क्योंकि यह संरचनात्मक स्थिरता और निर्माण दक्षता, दोनों के लिए लाभदायक था।
- राजसी क्षेत्र (Royal Area) के अंदर जल प्रबंधन से संबंधित अनेक व्यवस्थाएँ देखने को मिलती हैं। यहाँ मुख्य सड़क की ओर विस्तृत अष्टकोणीय जल मंडप (Water Pavilion) मौजूद था, जो संभवत: एक प्रकार का पानी का फव्वारा था। राजसी क्षेत्र में मौजूद नहर सर्वोत्तम रूप से संरक्षित नहरों में से एक था।
- हम्पी में एक सीढ़ीदार जलाशय (Stepped Tank) मिला है, जो काले शिस्ट पत्थरों से तैयार किया गया है। निर्माण की दृष्टि से यह जलाशय अन्य जलाशयों से बिल्कुल भिन्न है।
- यह निश्चित नहीं है कि इस जलाशय का उपयोग किस विशिष्ट उद्देश्य से किया जाता था, लेकिन अधिकांशत: इसका उपयोग राजघरानों द्वारा धार्मिक समारोहों के दौरान किया जाता था।
- देव राय प्रथम ने तुंगभद्रा नदी पर एक बाँध का निर्माण कराया ताकि वह शहर में नहरें ला सके और पानी की कमी दूर कर सके।

शाही क्षेत्र में स्थित दो स्नान मंडप (Two Bathing Pavilions of the Royal Centre):

'रानी का स्नानघर' (Queen's Bath) और 'अष्टकोणीय स्नानघर' (Octagonal Bath) अपनी वास्तुकलात्मक विशेषताओं के लिए अत्यंत विख्यात हैं।

- **रानी का स्नानघर** (Queen's Bath):
  - इसके मेहराबों और गुंबदों के चारों ओर एक गलियारा (Corridor) बना हुआ है तथा इसमें उभरे हुए छज्जे भी बने हुए हैं। यह संरचना इस इमारत को एक स्नानघर की अपेक्षा एक महलनुमा संरचना प्रदान करती है।
  - इमारत के चारों ओर एक जल निकाय बनाया जाता था। इसके माध्यम से स्नानघर में पानी भरा जाता था तथा यह किसी भी प्रकार की घुसपैठ में बाधा भी उत्पन्न करता था।
- अष्टकोणीय स्नानघर (Octagonal Bath):
  - अष्टकोणीय स्नानघर महल के आधारों (Bases) के एक समूह के पास स्थित है।
  - इस अष्टकोणीय टैंक के चारों ओर शहतीरों (Beams) को सहारा देने वाले घनाकार स्तंभों से बना एक बड़ा खुला बरामदा है।
  - इसके मध्य में एक विशाल अष्टकोणीय चबूतरा स्थित है, जिसके ऊर्ध्वाधर फलकों पर बांसुरीनुमा (Fluted) सुंदर सजावट है।
  - यहाँ पर अलौकिक घोड़ों (Supernatural Horses) की कई मूर्तियाँ हैं। मंदिर के भीतर धर्मनिरपेक्ष संरचनाएँ भी मौजूद हैं।
  - इस शैली का एक प्रसिद्ध उदाहरण 'कमल महल' (Lotus Mahal) है।

चित्र: कमल महल

चित्र: हम्पी स्थित विट्ठल मंदिर

होयसल शैली (Hoysala Style)

- होयसल साम्राज्य दक्षिण कर्नाटक के मैसूर क्षेत्र में स्थित था। अत: होयसल वास्तुकला इसी क्षेत्र में देखने को मिलती है। यहाँ पर विशाल केंद्रीय कक्ष के चारों ओर कई मंदिर स्थित हैं।
- यहाँ पर पवित्र स्थल के निर्माण के लिए तारकीय (Stellate) या तारे के आकार (Star Shaped) की योजना अपनाई गई है।
- इस शैली के मंदिरों के निर्माण हेतु नरम सेलखड़ी पत्थरों (Soap Stone) का उपयोग किया गया है। होयसल मंदिरों के बाहरी और आंतरिक, दोनों हिस्सों में सुंदर नक्काशी की गई है।
- प्रत्येक कक्ष के ऊपर शिखर बनाया गया है। ये मूलत: क्षैतिज रेखाओं और पट्टियों के विन्यास में व्यवस्थित हैं।
- इन मंदिरों को ऊँचे उठे मंच या जगती पर निर्मित किया गया है और इनकी दीवारें व सीढ़ियाँ टेढ़े-मेढ़े (Zig-Zag) प्रारूप में बनाई गई हैं।

चित्र: बेलूर स्थित चेन्नकेशव मंदिर

नायक शैली (Nayaka Style)

- विजयनगर साम्राज्य के पतन के पश्चात् नायकों का उदय हुआ। नायकों द्वारा विकसित वास्तुकला की शैली को 'मदुरई शैली' के नाम से भी जाना जाता है।
- इस काल का सबसे प्रसिद्ध वास्तुशिल्प मदुरई का मीनाक्षी-सुंदरेश्वर मंदिर है।
- वस्तुत: इसके विशाल मंदिर परिसर में दो मंदिर स्थित हैं। इनमें पहला, सुंदरेश्वर मंदिर, जो भगवान शिव को समर्पित है और दूसरा, मीनाक्षी मंदिर, जो शिव की पत्नी मीनाक्षी को समर्पित है।
- इन मंदिरों में द्रविड़ शैली की सभी विशेषताएँ मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त, इस शैली के मंदिरों में एक अन्य प्रमुख विशेषता भी शामिल है, जिसे 'प्राक्रम' (Prakram) कहा जाता है।

- 'प्राक्रम' वस्तुतः गर्भगृह के चारों ओर निर्मित एक विशाल गलियारा होता है, जिसे छत से ढका जाता है। यह एक प्रकार का प्रदक्षिणा पथ होता है। यह संरचना मंदिर के कुछ हिस्सों को घेरती है तथा मंदिर के अनेक हिस्सों को आपस में जोड़ती है।
- इस शैली के मंदिर की सभी दीवारों पर जटिल नक्काशी (Intricate Carvings) देखने को मिलती है।
- मुख्य मंदिर के अक्ष धुरी से थोड़ा हटकर बड़ा टैंक स्थापित किया गया है, जो मंदिर की एक अन्य प्रभावशाली विशेषता है।
- सीढ़ियों और स्तंभों वाले बरामदे से घिरे इस टैंक का उपयोग अनुष्ठानिक स्नान के लिए किया जाता था।

चित्रः मदुरई का मीनाक्षी मंदिर

1.10 मध्यकालीन भारत में वास्तुकला (Architecture in Medieval India)

12वीं शताब्दी के अंत में, गोर राजवंश ने लगभग पूरे उत्तर भारत में अपनी शक्ति का विस्तार कर लिया था। इस इस्लामी शासन ने मध्य एशियाई इस्लामी संस्कृति का भारत में सूत्रपात करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके परिणामस्वरूप विकसित हुई वास्तुकला की शैली को 'इंडो-इस्लामिक शैली' (Indo-Islamic Style) के नाम से जाना जाता है।

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला (Indo-Islamic Architecture)

- वास्तुकला की यह शैली भारतीय, फ़ारसी, अरबी और तुर्की शैली का मिश्रण है।
- ग़ुलाम वंश की आरंभिक इमारतों में गुंबद और मेहराब के परिपक्व स्वरूप देखने को नहीं मिलते हैं।
- मेहराबों (Arches) और गुंबदों (Domes) की परिपक्वता की शुरुआत कुतुब मीनार के निकट स्थित अलाई दरवाजे में देखने को मिलती है। इसका निर्माण अलाउद्दीन खिलजी ने कराया था।

इस्लामिक शैली के तत्त्व	पारंपरिक भारतीय शैली के तत्त्व
छतरियाँ ऊँची मीनारें अर्ध-गुंबदाकार संरचना जालीनुमा संरचना (Jali Work) सुलेखन (Calligraphy) पित्रा दुरा (Pietra Dura) शैली (सफेद संगमरमर के पत्थर पर अन्य छोटे रंगीन पत्थरों के माध्यम से सुंदर चित्रकारी करना)	सजावटी प्रकोष्ठ (Decorative Brackets) छज्जे (Balconies) चापाकार त्रिभुज संरचना (गुंबद को इमारत में इस प्रकार से व्यवस्थित करना कि चारों कोनों में चार त्रिभुजाकार संरचनाएँ निर्मित हो जाएँ)

- चूँकि इस्लाम में मानव और उसके प्रतिरूपों की पूजा करने की अनुमति नहीं है, इसलिए इमारतों और अन्य भवनों को सामान्यतः ज्यामितीय और अरबेस्क (Arabesque) कलाकृतियों से सजाया जाता है।
- ये कलाकृतियाँ निम्न उच्चावच वाले पत्थर पर उकेर कर, प्लास्टर पर कटाई करके, रँगाई या जड़ाई करके बनाई जाती हैं। गारे के रूप में चूने का उपयोग भी पारंपरिक भवन शैली से अलग एक प्रमुख तत्त्व था।
- मकबरे का निर्माण इस्लामी वास्तुकला की एक अन्य प्रमुख विशेषता है, जिसके अंतर्गत मृतकों को दफ़नाया जाता है।

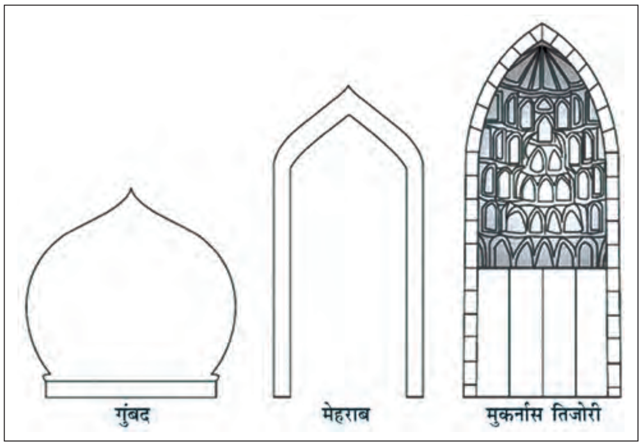

चित्रः इस्लामी वास्तुकला के प्रमुख तत्त्व

मकबरा वास्तुकला (Tomb Architecture)

- मकबरा वास्तुकला में निम्नलिखित सामान्य घटक शामिल हैं-
  - एक गुंबदाकार कक्ष (हुजरा)
  - इसके केंद्र में पश्चिमी दीवार पर मेहराबयुक्त एक कब्र
  - भूमिगत कक्ष में वास्तविक कब्र
- इस सामान्य मकबरा वास्तुकला में मुग़लों ने एक नया आयाम जोड़ा और मकबरे के चारों ओर बगीचे का निर्माण किया।
- मुग़ल कब्रों को आमतौर पर एक विशाल उद्यान के केंद्र में निर्मित किया जाता था और बाद में, उस उद्यान को चार वर्गाकार खंडों में विभक्त किया जाता था। इसे 'चार-बाग शैली' के रूप में जाना जाता है।
- विद्वानों का मत है कि इस चार-बाग शैली का विकास मूलतः मुग़लों की मूल भूमि, काबुल घाटी में हुआ था।

- मुग़लों को गुंबद वास्तुकला की 'दोहरी गुंबद प्रणाली' (Double Dome System) और जड़ाऊ (Inlay) सजावट की 'पित्रा दुरा शैली' शुरू करने का श्रेय भी दिया जाता है।

चित्र: हुमायूँ का मकबरा

अरबेस्क शैली (Arabesque Style)

- अरबेस्क का अर्थ है- 'ज्यामितीय वानस्पतिक अलंकरण' (Generatricized Vegetal Ornament)।
- इसकी विशेषता यह है कि इसके अंतर्गत एक सतत् तना निर्मित किया जाता है और वह तना निरंतर अन्य पत्तीदार द्वितीयक तनों में विभाजित होता रहता है। इस प्रकार एक नियमित शृंखला का निर्माण होता है।
- द्वितीयक तने पुन: मुख्य तने में एकीकृत होने के लिए तृतीयक तने में विभाजित हो जाते हैं। वास्तुकलात्मक अलंकरण की यह शैली 'अरबेस्क शैली' कहलाती है।

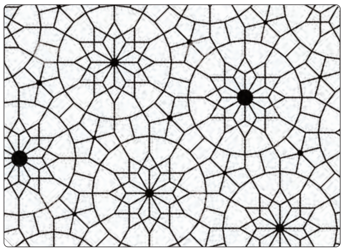

चित्र: अरबेस्क शैली

1.11 प्रमुख इंडो-इस्लामिक वास्तुकलात्मक शैलियाँ (Prominent Indo-Islamic Architectural Styles)

- साम्राज्यिक शैली (Imperial Style) - दिल्ली सल्तनत
- प्रांतीय शैली (Provincial Style) - मालवा, बंगाल और जौनपुर
- मुग़ल शैली (Mughal Style) - दिल्ली, आगरा और लाहौर
- दक्कन शैली (Deccan Style) - बीजापुर और हैदराबाद

साम्राज्यिक शैली - दिल्ली सल्तनत (Imperial Style – Delhi Sultanate)

- 1192 ईसवी में दिल्ली पर अधिकार करने के लगभग तुरंत बाद, गोर सुल्तान 'मोहम्मद गोरी' के सैन्य कमांडर कुतुबुद्दीन ऐबक ने अनेक हिंदू और जैन मंदिरों को ध्वस्त कर दिया और एक मस्जिद बनाने का आदेश दिया। यहीं से, हम दिल्ली सल्तनत के तहत वास्तुकला के विकास की शुरुआत मान सकते हैं।
- दिल्ली सल्तनत के दौरान भारत की स्वदेशी और मुस्लिम रीति-रिवाज़ों व शैलियों का समन्वय हुआ। फलत: इंडो-इस्लामिक कला और वास्तुकला की शुरुआत हुई। यह शैली बाद के वर्षों में, मुग़ल सम्राटों के दौरान अपने चरम पर पहुँच गई। अध्याय के आगामी खंड में सल्तनत काल के प्रत्येक राजवंश के दौरान हुए स्थापत्य के विकास पर चर्चा की गई है-

ग़ुलाम वंश (Slave Dynasty)

- इस दौरान वास्तुकला का विकास मुख्यत: इस राजवंश के दो शासकों - कुतुबुद्दीन ऐबक और इल्तुतमिश - के अधीन हुआ।
- वास्तुकला की इस शैली को 'मामलूक शैली' के नाम से भी जाना जाता है।

कुतुबुद्दीन ऐबक (Qutubuddin Aibak)

- उसने दिल्ली में एक जैन मंदिर के खंडहरों पर 'कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद' का निर्माण करवाया।
- इसके निर्माण हेतु केवल लाल पत्थरों का उपयोग किया गया है।
- यह किसी सल्तनत शासक द्वारा अपने पहले शहर दिल्ली में बनाई गई पहली सामुदायिक मस्जिद (Congregational mosque) थी।
- उसने दिल्ली में कुतुब मीनार का निर्माण भी शुरू किया था, जिसे उसके उत्तराधिकारी शासक इल्तुतमिश ने पूर्ण किया। कुतुब मीनार का निर्माण एक लोकप्रिय सूफ़ी संत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की याद में कराया गया था।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर में 'अढाई दिन का झोंपड़ा' (Adai-din-ka-Jhopra) भी बनवाया था। यह भी एक मस्जिद ही थी। इसका निर्माण एक संस्कृत पाठशाला को तोड़कर कराया गया था।

चित्र: कुतुब मीनार और अलाई दरवाजा

इल्तुतमिश (Iltutmish)

- इल्तुतमिश ने अपने सबसे बड़े पुत्र नसीरुद्दीन महमूद के मकबरे का निर्माण दिल्ली स्थित सुल्तान गढ़ी में करवाया।
- यह तुर्कों द्वारा भारत में बनवाया गया पहला मकबरा था।
- इल्तुतमिश ने मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह का निर्माण भी करवाया था।
- दिल्ली में स्थित 'बलबन का मकबरा' शुद्ध इस्लामी शैली में बना हुआ है।
- दुनिया की सबसे ऊँची मीनारों में से एक 'कुतुब मीनार' का निर्माण कार्य उसने ही पूरा कराया था।

खिलजी वंश (Khilji Dynasty)

- खिलजियों ने भारत में वास्तुकला की सेल्जुक शैली (Seljuk style) की स्थापना की।

अलाउद्दीन खिलजी (Alauddin Khilji)

- 1311 ईसवी में अलाउद्दीन खिलजी ने कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के निकट 'अलाई दरवाजा' नामक एक इमारत का निर्माण कराया था। इसकी बाहरी दीवारों पर फ़ारसी भाषा में प्रशंसात्मक छंद (Eulogy verses) उत्कीर्णित किए गए हैं।
- विशेष रूप से, परवर्ती काल में इंडो-इस्लामी वास्तुकला में कई विशेषताएँ आम हो गई थीं, जैसे-
- हल्की और गहरी चिनाई (Light and Dark Masonry) का मिश्रण।
- मेहराबों की सजावट।
- पत्थर पर कलाकृतियाँ उकेरना।

तुग़लक वंश (Tughlaq Dynasty)

इस वंश के तीन महत्त्वपूर्ण शासक गयासुद्दीन तुग़लक, मुहम्मद-बिन-तुग़लक और फ़िरोज़शाह तुग़लक थे।

गयासुद्दीन तुग़लक (1320-1325 ई.) ने दिल्ली का तीसरा ऐतिहासिक शहर तुग़लकाबाद बसाया।

गयासुद्दीन तुग़लक का मकबरा लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है। इसकी बाहरी संरचना अनियमित पंचकोणीय (Irregular Pentagonal) है। इसके शीर्ष पर एक नुकीली कलशनुमा (Finial) संरचना है।

तुग़लकों ने मेहराब और लिंटल (Arch and Lintel) के संयोजन से इमारत को मजबूती प्रदान करने पर अधिक ध्यान दिया है। इस हेतु उन्होंने 'बट्टार' (Battar) नामक निर्माण शैली अपनाई, जिसके तहत 'झुकी हुई दीवारें' (Slopping Walls) का निर्माण किया गया। जैसा कि नीचे चित्र में दिखाया गया है।

चित्र: गयासुद्दीन तुग़लक का मकबरा

दिल्ली का चौथा शहर 'जहाँपनाह' 14वीं शताब्दी के मध्य में मोहम्मद-बिन-तुग़लक द्वारा निर्मित किया गया था। फ़िरोज़शाह कोटला मैदान इसके अतीत का एक प्रमुख अवशेष है, जिसका निर्माण फ़िरोज़शाह तुग़लक ने दिल्ली में कराया था। उसने जौनपुर, फ़तेहाबाद और हिसार नामक किलांबद शहरों (Fortified Cities) की भी स्थापना की थी।

इस काल के मेहराब भारी, विशाल, खुरदरे और साधारण हैं। इनमें धूसर बलुआ पत्थर का उपयोग किया गया है और न्यूनतम अलंकरण (Minimum decoration) देखने को मिलता है।

इस काल को 'वास्तुकला का संकट काल' कहा जाता था, क्योंकि इस दौरान भवनों की सुंदरता के बजाय, उनकी मजबूती पर ध्यान केंद्रित किया गया था।

लोदी वंश (Lodhi Dynasty)

चित्र: लोदीकालीन मकबरा

- 1520 के दशक में लोदी काल के दौरान जमाली कमाली (Jamali Kamali) की मस्जिद भी बनाई गई थी। इसमें एक-दूसरे से सटे हुए दो स्मारक शामिल हैं। इनमें से एक है- मस्जिद और दूसरा है- जमाली व कमाली नामक दो व्यक्तियों का मकबरा।
- लोदीकालीन वास्तुकला की एक सर्वप्रमुख विशेषता थी कि इस दौरान 'दोहरे गुंबद' (Double Dome) वाली संरचना का प्रचलन हुआ।